

ॐ

अगस्त

तेऽग्निमब्रुवञ्जातवेद एतद्विजानीहि
किमेतद्यक्षमिति तथेति ॥३॥

देव अग्नि से बोले “जातवेद! आप
इस बात का पता लगायें कि यह दिव्य

यक्ष कौन है?” अग्नि ने कहा “बहुत
अच्छा।”

ब्रह्मचर्य-साधना :

शारीरिक ब्रह्मचर्य तथा मानसिक ब्रह्मचर्य

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

यदि आप ब्रह्मचारी होना चाहते हैं, तो आपको मन से शुद्ध होना बहुत आवश्यक है। मानसिक ब्रह्मचर्य अधिक महत्वपूर्ण है। आप शारीरिक ब्रह्मचर्य में सफल हो सकते हैं; किन्तु आपको मानसिक ब्रह्मचर्य में भी सफल होना चाहिए। मन की उस स्थिति को, जिसमें कोई कामुक विचार मन में प्रवेश नहीं करता, मानसिक ब्रह्मचर्य कहलाता है। यदि विचार अपवित्र होंगे, तो कामावेग बहुत प्रबल होगा। ब्रह्मचर्य सम्पूर्ण जीवनचर्या को व्यवस्थित करने पर निर्भर करता है।

यदि आप कामुक विचारों पर नियन्त्रण नहीं रख सकते, तो कम-से-कम स्थूल शरीर पर तो नियन्त्रण रखिए। प्रथमतः शारीरिक ब्रह्मचर्य का अति-नियमनिष्ठा से अभ्यास करना चाहिए। जब कामावेग आपको कष्ट दे, तो शरीर पर नियन्त्रण रखिए। मानसिक ब्रह्मचर्य शनैः-शनैः प्रव्यक्त होगा।

विषय-सुख में वास्तव में निरत होने की अपेक्षा कम-से-कम कर्मेन्द्रियों पर नियन्त्रण अवश्यमेव अच्छा है। यदि आप अपने जप तथा ध्यान में डटे रहें, तो शनैः-शनैः विचार भी शुद्ध हो जायेंगे और अन्ततोगत्वा मन पर भी अपरोक्ष नियन्त्रण हो जायेगा।

मैथुन अथवा यौन-सम्पर्क सभी बुरे विचारों को पुनर्जीवित करता तथा उन्हें जीवन का नया पट्टा प्रदान करता है। अतः प्रथमतः शरीर पर नियन्त्रण करना चाहिए। प्रथम, शारीरिक ब्रह्मचर्य को सन्धारण करना

चाहिए। तभी आप मानसिक शुद्धता अथवा मानसिक ब्रह्मचर्य में सफल हो जायेंगे।

आप भले ही महीनों अथवा वर्षों तक मैथुन को बन्द कर देने में समर्थ हों; किन्तु स्त्रियों के प्रति कोई काम-वासना अथवा यौनाकर्षण नहीं होना चाहिए। जब आप किसी स्त्री को देखें अथवा जब आप स्त्रियों की संगति में हों, तब आपमें कोई असद्-विचार भी नहीं उठना चाहिए। आप इस दिशा में सफल हो जाते हैं, तो आप पूर्ण ब्रह्मचर्य में प्रतिष्ठित हो गये। आपने खतरे का क्षेत्र पार कर लिया।

विचार वास्तविक कर्म है। एक दुर्वासना जार-कर्म के समान है। वासना कर्म से भी अधिक है। किन्तु किसी व्यक्ति को वास्तव में मार डालने तथा व्यक्ति को मार डालने को सोचने में, वास्तविक मैथुन करने तथा किसी महिला के साथ सम्भोग करने को सोचने में बहुत बड़ा अन्तर है। दर्शनानुसार व्यक्ति को मार डालने को सोचना अथवा मैथुन करने को सोचना वास्तविक कर्म है।

यदि मन में एक भी अशुद्ध कामुक विचार है, तो आप पूर्ण मानसिक ब्रह्मचर्य की आशा नहीं रख सकते। तब आप ऊर्ध्वरेता अथवा ऐसा व्यक्ति नहीं कहला सकते, जिसमें वीर्य-शक्ति ऊर्ध्व दिशा की ओर मस्तिष्क में प्रवाहित होती है जहाँ वह ओज-शक्ति के रूप में संचित रहती है। एक भी अशुद्ध

विचार रहने पर वीर्य की नीचे की ओर प्रवाहित होने की प्रवृत्ति होती है।

प्रलोभनों तथा बीमारी में भी मानसिक ब्रह्मचर्य की स्थिति को बनाये रखना चाहिए। तभी आप सुरक्षित रह सकेंगे। रोग-काल में तथा आपके इन्द्रिय-विषयों के सम्पर्क में आने के समय में भी इन्द्रियाँ विद्रोह करना प्रारम्भ कर देती हैं।

यदि आपके मन में कामुक-प्रकृति के विचार उठते हैं, तो यह प्रच्छन्न काम-वासना के कारण है। धूर्त तथा कूटनीतिक मन स्त्री को देखने तथा उससे वार्तालाप के द्वारा मूक तुष्टिकरण चाहता है। चोरी-छिपे अथवा अनजाने मानसिक मैथुन घटित होता है। आपको घसीटने वाली शक्ति प्रच्छन्न काम-वासना है।

काम-शक्ति का पूर्ण रूप से उदात्तीकरण नहीं हुआ है। प्राणमय-कोश को नवीन रूप नहीं दिया गया है तथा उसका पूर्णतः शोधन नहीं किया गया है। यही कारण है कि आपके मन में अशुद्ध विचार प्रवेश करते हैं। जप तथा ध्यान अधिक करें। समाज की किसी भी रूप में निःस्वार्थ सेवा करें। आपको शीघ्र ही शुद्धता उपलब्ध होगी।

आप शुद्धता अथवा ब्रह्मचर्य-रूपी जल तथा दिव्य-प्रेम रूपी साबुन से अपने मन को स्वच्छ करना सीखें। आप साबुन तथा जल से केवल शरीर का प्रक्षालन करने से अन्तर में शुद्ध बनने की कैसे आशा कर सकते हैं? आन्तरिक शुद्धता बाह्य शुद्धता से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

ब्रह्मचर्यमय जीवन अविच्छिन्न बनाये रखें। इसमें ही आपकी आध्यात्मिक उन्नति तथा साक्षात्कार

निहित है। पापमय कर्म की पुनरावृत्ति करके इस भयानक शत्रु कामुकता को जीवन का नया पट्टा न दें।

मन को पूर्णतः व्यस्त रखें। आन्तरिक आध्यात्मिक जीवन को इन्द्रिय-विषयों का गम्भीर चिन्तन वास्तविक इन्द्रिय-तुष्टि की अपेक्षा अधिक क्षति पहुँचाता है। यदि साधना के द्वारा मन को शुद्ध नहीं किया गया, तो बाह्य इन्द्रियों का दमन मात्र आकांक्षित परिणाम नहीं लायेगा। यद्यपि बाह्य इन्द्रियाँ दमित हो जाती हैं तथापि उनके आन्तरिक प्रतिरूप, जो फिर भी ओजस्वी तथा सशक्त होते हैं, मन से प्रतिशोध लेते तथा अत्यधिक मानसिक विक्रोभ तथा निरंकुश कल्पनाओं को जन्म देते हैं।

मन ही वास्तव में सभी कार्य करता है। आपके मन में एक इच्छा उत्पन्न होती है और तब आप विचार करते हैं। तदनन्तर आप कार्य करने के लिए आगे बढ़ते हैं। मन के संकल्प को कार्यान्वित किया जाता है। प्रथम संकल्प या विचार उत्पन्न होता है और तत्पश्चात् कार्य आता है। अतः कामुक विचारों को मन में प्रवेश न करने दें।

कोई भी स्थान किसी भी समय रिक्त नहीं रहता। यह प्रकृति का नियम है। यदि एक वस्तु किसी स्थान से हटा दी जाती है, तो तत्काल अन्य वस्तु उसका स्थान ग्रहण करने के लिए आ जाती है। यही नियम आन्तरिक मानसिक जगत् के विषय में भी लागू होता है। अतः कुविचारों का स्थान लेने के लिए मन में उदात्त दिव्य विचारों को आश्रय देना आवश्यक है। आपके विचारों के अनुरूप ही आपका गठन होता है। यह मनोविज्ञान का एक अपरिवर्तनीय नियम है। दिव्य विचारों को मन में आश्रय देने से दुष्ट मन धीरे-धीरे ईश्वरीय बन जाता है। (अनूदित)

गुरु के उपदेश ही गुरु हैं

परम पावन श्री स्वामी विद्यानन्द जी महाराज

सूर्य के प्रकाश से समस्त जगत् जागता है। सूर्य के प्रकाश से अन्धकार समाप्त होता है, निद्रा का स्थान जागृति ले लेती है और आलस्य का स्थान सक्रियता ले लेती है। सूर्य के प्रकाश के द्वारा इस संसार के समस्त प्राणी वस्तुओं को देखते हैं, वस्तुओं को स्पष्ट रूप में ग्रहण करते हैं। अन्धकार में व्यक्ति लड़खड़ा कर गिर जाता है, मार्ग भटक जाता है और उसे चोट लगने का भय बना रहता है। प्रकाश में व्यक्ति आगे बढ़ सकता है, अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकता है और भय से मुक्त रहता है। अन्धकार में अस्थायी रूप से सभी कार्य स्थगित कर दिये जाते हैं।

अतः सूर्य जगाने वाला है, प्रकाशदाता है। सूर्य मार्गदर्शक है। सूर्य ही प्रत्येक व्यक्ति को लक्ष्य की ओर निर्विघ्न, अबाध उन्नति का आश्वासन देता है। सूर्य के अभाव में आँखें रहते हुए भी व्यक्ति अन्धे के समान ही रहता है।

एक सच्चे जिज्ञासु जीवात्मा के जीवन में, एक मुमुक्षु के, साधक के, आध्यात्मिक आकांक्षी के जीवन में गुरु का महत्त्व वैसा ही है जैसे सूर्य का। गुरु ही हैं जो हमें अज्ञान की निद्रा से जगाते हैं। गुरु ही हैं जो अपने प्रकाश के द्वारा अज्ञान के अन्धे को और जीवात्मा की जीवन के विषय में जो गलत धारणाएँ हैं, उनको दूर करते हैं तथा सही विवेचन का प्रकाश, सही बोध और सही विचार का प्रकाश लाते हैं। यह गुरु ही

हैं जो स्वयं अपने उदात्त, उत्कृष्ट, व्यक्तिगत उदाहरण के द्वारा, अपनी निजी परिवर्तनकारी विचारधारा के द्वारा, स्वयं अपनी शिक्षाओं के द्वारा और निजी निर्देशों के द्वारा हमें देख सकने के योग्य भी बनाते हैं।

यह गुरु ही हैं जो पथ की ओर संकेत भी करते हैं और हमें पथ देख पाने के योग्य भी बनाते हैं। वह मार्ग के गड्ढों और संकटों की ओर भी संकेत करते हैं तथा हमें सावधान, सतर्क और जागृत करते हैं। जिस प्रकार सूर्य सक्रियता का सूत्रपात करता है, उसी प्रकार गुरु भी हमें उठने, जागृत होने, ज्ञान प्राप्त करके साक्षात्कार प्राप्त करने और सदा के लिए सौभाग्यशाली हो जाने के लिए प्रेरित करते हैं।

गुरु की प्रभा, गुरु की दीप्ति, गुरु का प्रकाश उनकी शिक्षाएँ ह्यज्ञानोपदेश हैं। उनका सन्देश उनके उपदेश हैं। यही मिल कर वास्तव में गुरु और गुरु-कृपा को बनाते हैं।

गुरु की कृपा क्या है? यह कोई ऐसी चमत्कारी वस्तु नहीं है जो उनमें से प्रकट होगी। गुरुदेव के कथनानुसार ह्यह “गुरु के कमण्डलु से निकलने वाले जल की भाँति उनकी कृपा, उनका अनुग्रह उनके सन्देश, उपदेश और आदेश के रूप में हैं। उनकी शिक्षाएँ, उनके उपदेश, उनके निर्देश और उनके सकारात्मक, आदेशसूचक निर्देश ही उनकी कृपा के सक्रियात्मक प्रकटीकरण हैं।”

“और अधिक सोये न रहें, जागें, आसन में बैठें, जप करें; परमात्मा का ध्यान करें। गीता का एक अध्याय पढ़ें। सात्त्विक भोजन करें। सादा जीवन जियें। अपनी आवश्यकताओं को घटायें। क्षमा के द्वारा क्रोध पर नियन्त्रण करें। प्रतिदिन कुछ समय के लिए मौन रहें। प्रत्येक परिस्थिति में सत्य बोलें। ब्रह्मचर्य का पालन करें। प्रतिदिन अपने सामर्थ्य के अनुसार दान करें। अन्तर्निरीक्षण करें। अपने दोषों को खोजें और उन्हें दूर करें। उन्नायक और प्रेरक स्वाध्याय से प्रेरणा ग्रहण करें। दैनिक स्वाध्याय आपके ज्ञान और विवेक में वृद्धि करेगा; आपका मन परिवर्तित होगा और हृदय पवित्र, उन्नत और प्रेरित होगा। सन्तों की जीवनियाँ पढ़ें। इस प्रकार दिन-प्रतिदिन उन्नति करें।”

इस प्रकार गुरु व्यावहारिक सुझाव देते हुए सावधान करते हैं कि ये सभी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक नियम हैं। इनका अत्यन्त दृढ़तापूर्वक पालन करना चाहिए। आपको अपने मन को किंचित् भी ढील नहीं देनी चाहिए और यदि आपसे कुछ गलती हो जाये, तो स्वयं को दण्डित करें, आत्मदण्ड दें। महान् व्यक्तियों ने केवल इसी ढंग से उन्नति की है। आध्यात्मिक आकांक्षाओं, सच्चे साधकों, शिष्यों और भक्तों के लिए यह सकारात्मक आदेश ‘अनुग्रह’ है। यही गुरु-कृपा है। यह हमारे जीवन के लिए प्रकाश है। ऐसा प्रकाश जो हमारे मार्ग को उज्वल करता है और हमारे प्राप्तव्य लक्ष्य को स्पष्टतया दर्शाता है।

अतः गुरु कभी जाते नहीं। गुरु कभी अनुपस्थित नहीं होते। वह शाश्वत और अमर हैं और हमें यह सिखाने आये हैं कि हम शाश्वत और अमर हैं। जब तक हमारे ऊपर आकाश में सूर्य, चन्द्रमा और सितारे

द्युतिमान हैं, तब तक गुरु अपने देदीप्यमान उपदेशों के रूप में हम सब प्राणियों में विद्यमान हैं। गुरु, ज्ञानोपदेश हमारा धन, हमारी निधि हैं। हमारे लिए यह द्रष्टव्य कृपा है। यह हमारे लिए है और यह शाश्वत प्रकाश हमारे जीवन को और हमारे सम्मुख के मार्ग को उज्वल और प्रकाशित करता है।

इसको भली-भाँति समझें और प्रकाश में अग्रसर हों। इसको स्पष्टतया समझें और जान लें कि गुरु वहीं हैं जहाँ उनके उपदेशों के प्रति सम्मान है, उनके उपदेशों को पूर्ण करने की उत्सुकता है और उनके दर्शाये मार्ग का अनुसरण करने की तीव्र इच्छा है। जहाँ उस पथ पर चलने की, उनके आदेशों का अनुपालन करने की गम्भीर उत्कट इच्छा है, वहाँ गुरु पूर्णरूपेण विद्यमान हैं और गुरु-कृपा पूर्णतया स्थित है। ऐसे साधक को गुरु का अनुग्रह समृद्ध कर देता है।

जगद्गुरु भगवान् श्री कृष्ण आज हमारे समक्ष उपस्थित नहीं हैं। हम उनके सम्मुख बैठ कर उनसे प्रश्न नहीं पूछ सकते, अपनी समस्याएँ उनके समक्ष नहीं रख सकते; हम उन्हें पत्र नहीं लिख सकते और पत्रोत्तर में उनके निर्देश प्राप्त नहीं कर सकते; हम उनसे दूरभाष से भी वार्तालाप नहीं कर सकते। वह यहाँ नहीं हैं। किन्तु जब तक सूर्य, चन्द्रमा और सितारे आकाश में द्युतिमान हैं, जब तक मानवता के लिए गीता जीवन्त निधि के रूप में विद्यमान है, तब तक क्या कृष्ण जीवित नहीं हैं? कौन कह सकता है कि कृष्ण-कृपा, कृष्ण-अनुग्रह विद्यमान नहीं है? कोई ऐसा कह सकता है? क्योंकि उन्होंने कहा है कि ‘मैं गीता में विद्यमान हूँ, गीता में मेरी ज्योति है, गीता मेरा हृदय ही है।’

सम्पूर्ण विश्व में करोड़ों बौद्ध हैं। क्या वह भगवान् बुद्ध को मिल सकते हैं, प्रश्न पूछ सकते हैं, उत्तर पा सकते हैं, दूरभाष से वार्तालाप कर सकते हैं? तथापि कितनी ही प्रेरणा-प्राप्त दिव्यात्माएँ अष्ट-मार्ग पर चल कर निर्वाण और बुद्धत्व प्राप्त कर रही हैं! जिन्होंने उनको अपने जीवन का प्रकाश, अपने जीवन का सूर्य बना लिया है, वह अन्धे में नहीं चलते। उन्हें सही ज्ञान है, करोड़ों ही व्यक्ति इन महान् विभूतियों के उपदेशों से लाभान्वित हो रहे हैं। हमारे जीवन में उनका अनुग्रह, उनकी विद्यमानता, उनकी शक्ति, उनकी क्षमता, उनकी ऊर्जा और उनका प्रकाश है। उनकी अदृश्य विद्यमानता का बल है। जीवन्मुक्त कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होतेहह 'ब्रह्मवित् ब्रह्मैव भवति' (ब्रह्म का ज्ञाता ब्रह्म ही हो जाता है)। उसने जो चाहा होता है, वही बन जाता है, वही अद्वितीय सत्ता, 'एकमेवाऽद्वितीयं ब्रह्म', ब्रह्मज्ञानी वही हो जाता है, और इसीलिए वह व्यापक हो जाता है, सदैव रहता है, 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म।'

इन सत्यों को संगठित करें। ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म से परिपूर्ण है, क्योंकि 'प्रज्ञानं ब्रह्म' यह ब्रह्म ही है। बोधि (बुद्धि) भी ब्रह्म है। प्रज्ञा ब्रह्म ही है और प्रबुद्ध व्यक्ति प्रज्ञा हो जाता है। वह ब्रह्म हो जाता है, और ब्रह्म 'है', 'था' नहीं। ब्रह्म यहाँ और अभी भी है, केवल ब्रह्म ही ब्रह्म है; सब-कुछ ब्रह्म से ही परिपूर्ण हैहह 'ब्रह्मैव केवलम्; सर्वं ब्रह्ममयम्।'

भगवान् ने हमें विवेक और विचार दिये हैं। विचार करें, मनन करें, गहनता से चिन्तन करें। अपने समक्ष के सत्य को स्पष्टतया देखें, सत्य के प्रकाश में जियें और सदा के लिए सौभाग्यशाली हो जायें।

इस प्रकार व्यक्ति को गुरु के शाश्वत उपदेशों के प्रकाश के द्वारा निर्देशित ऊर्जास्पद जीवन जीना चाहिए। गुरु अपने ज्ञानोपदेश के द्वारा ही कार्य करते हैं जिसमें कि वह सक्रिय रूप से विद्यमान होते हैं। वही वास्तव में गुरु हैं, अन्यथा भले ही वह रक्त-मांस के सजीव शरीर-रूप में भी हमारे सम्मुख उपस्थित हों; परन्तु यदि हममें उनके उपदेशों को पालन करने की श्रद्धा नहीं है, तब हमारे लिए उनका अस्तित्व न होने के समान ही है। परन्तु यदि उनका अस्तित्व नहीं भी है और आप उनके उपदेशों को अपने जीवन का प्रकाश और संदर्शक बना लेते हैं, तब वह आपके लिए उपस्थित हैं।

यदि सूर्य का प्रकाश न हो तो वह क्या है? यदि सूर्य में प्रकाश नहीं तो वह सूर्य नहीं है। वह इसीलिए सूर्य है; क्योंकि वह नित्य प्रकाश विकीर्ण करता हैहहअक्षय, अनन्त प्रकाश प्रदान करता है। इसी प्रकार गुरु के ज्ञानोपदेश ही गुरु हैं।

इसलिए हमें प्रसन्न होना चाहिए कि हमारे पास यह निधि, यह कृपा है। हम उनके उदात्त, प्रांजल, प्रबुद्ध उपदेशों में विचर रहे हैं। अतः हमें इस दृढ़ निश्चय, उत्साह, अटल विश्वास और दृढ़ धारणा के साथ अग्रसर होना चाहिए कि हम इसी शरीर में, इसी जन्म में साक्षात्कार प्राप्त कर लेंगे, सफलता पा लेंगे; क्योंकि गुरु की ऊर्जा, गुरु की शक्ति हममें भरी हुई है। एक वस्तु जो आवश्यक है, वह है सही बोध, सही विवेक और सही प्रयास। तब सब-कुछ प्राप्त हो जाता है। समय पर सब-कुछ उपलब्ध हो जाता है।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

प्रणव-रूप आत्मा ४

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति जिस प्रकार से आत्मा की तीन सापेक्ष अवस्थाएँ हैं, उसी प्रकार अकार, उकार और मकार प्रणव अथवा ओंकार की तीन सापेक्ष अवस्थाएँ हैं। किन्तु जिस प्रकार से आत्मा की एक सर्वातिरिक्त अवस्था है, जिसका वर्णन इस प्रकार से किया गया है—**नान्तःप्रज्ञं न बहिष्प्रज्ञं नोभयतः प्रज्ञम्** आदि, उसी प्रकार से प्रणव अथवा ओंकार की भी सर्वातिशायी अवस्था है, जिसमें कोई मात्रा अथवा वर्ण नहीं है प्रत्युत वह अमात्र है, जिसका कोई माप नहीं और कोई वर्ण नहीं। जैसे आत्मा की इस अवस्था में आत्मा को 'यह', 'वह' आदि कोई संज्ञा नहीं दे सकते, वैसे ही ओंकार की अमात्र अवस्था का हम वर्णन नहीं कर सकते। यह अस्तित्व का एक स्फुरण है, ध्वनि की अवस्था नहीं है और इस स्फुरण में कोई भी भौतिक तत्त्व नहीं है। यह स्थूल, सूक्ष्म और कारण अवस्थाओं से अतीत है। यह केवल स्फुरण ही नहीं है जो सृष्टि को गति प्रदान करता है। यह कारण स्फुरण से भी सूक्ष्मतर है जिससे सृष्टि का प्रारम्भ हुआ। इस अवस्था को संज्ञा देने के लिए उपनिषद् में केवल एक ही शब्द का प्रयोग हुआ है, वह है अमात्र! जिसका कोई मान नहीं है। जिस प्रकार से आत्मा अग्राह्य है, असम्बद्ध है, अनिर्वचनीय है, अचिन्त्य है, उसी प्रकार यह ओंकार की अमात्र अवस्था है जो सब प्रकार से, परिमाण से अतीत है।

यह ओंकार अपनी चतुर्थ, सर्वातिरिक्त अवस्था में आत्मा ही है। ध्वनि रहित अवस्था है प्रणव की, जो सत् है। समस्त ध्वनियाँ और स्फुरण इस सत् में लय को प्राप्त होते हैं और सत् एक ही है। इसे अमात्र अवस्था में हम प्रणव कह सकते हैं अथवा अस्तित्व की अनिर्वचनीय अवस्था में आत्मा कह सकते हैं। शुद्ध सत् प्रणव और आत्मा का एकीभाव है।

'अमात्रश्चतुर्थोऽव्यवहार्यः'—ह्रस्वप्रणव की चतुर्थ अवस्था में अब हम कोई व्यवहार नहीं कर सकते। यह अवस्था प्रचलित भाषा के प्रयोग से विषयों आदि का सम्बन्ध बताने में व्यवहार के अयोग्य है, यहाँ शब्द-वाचक संज्ञा की समाप्ति हो जाती है। **'प्रपंचोपशमः'**—ह्रस्वप्रणव की इस मात्रा रहित (ध्वनि रहित) अवस्था में सम्पूर्ण ध्वनि-जगत् अर्थात् दृश्यमान जगत् का उपशमन हो जाता है। **'शिवोऽद्वैतः'**—ह्रस्वह सर्वाधिक मंगलमय, कल्याणमय और अद्वैत स्वरूप है आत्मा (ब्रह्म) की तरह, क्योंकि यह आत्मा है।

'ओंकार आत्मैव'—ह्रस्वह ओंकार जो प्रपंच रहित है, अति श्रेष्ठ है, यह आत्मा ही है। यह आत्मा के लिए ही दूसरा अभिधान है। यहाँ पहुँच कर सृष्टि और सृष्टिकर्ता एक हो जाते हैं, उनमें भेद नहीं रहता। ओंकार को आत्मा में लीन करने वाला सृष्टि को ब्रह्म में लीन करने वाला हो जाता है। सृष्टि का कर्तृत्व भाव

भी नहीं रह जाता, क्योंकि सृष्टि ही नहीं रहती। कोई नाद नहीं होता, जिसे सृष्टि का प्रथम नाद कहा जाये। ध्वनि स्वयं ही ध्वनि रहित अवस्था को प्राप्त हो जाती है। उस अवस्था में यह किसी प्रकार के सम्बन्ध से अतीत हो जाती है।

‘संविशत्यात्मनाऽऽत्मानम्’ ब्रह्मजो इस प्रकार से जानता है, वह स्वतः ही आत्मा के द्वारा (पारमार्थिक) आत्मा में प्रवेश करता है। हम किसी द्वार से आत्मा में प्रवेश नहीं करते, आत्मा के द्वारा ही आत्मा में प्रवेश करते हैं। हम आत्मा में प्रवेश नहीं करते, आत्मा ही आत्मा में प्रवेश करता है। हमारा अस्तित्व नहीं रहता। हमारा आत्मा में वाष्पीकरण हो जाता है और आत्मा आत्मा बन जाता है! शब्द प्रणव में लीन हो जाते हैं और प्रणव आत्मा हो जाता है। अब केवल आत्मा ही है! आत्मा के द्वारा जब आत्मा आत्मा बन जाता है, इसे आत्म-साक्षात्कार कहते हैं! आत्मा का साक्षात्कार! इसे ब्रह्म-साक्षात्कार भी कहते हैं ब्रह्मब्रह्म का साक्षात्कार! आत्मा के व्यष्टि शरीर की अवस्थाओं को अनुप्राणित करने के दृष्टिकोण से इस उपलब्धि को हम आत्म-साक्षात्कार कहते हैं। इसी आत्मा के द्वारा समष्टि अथवा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अनुप्राणित करने के दृष्टिकोण से यह उपलब्धि ब्रह्म-साक्षात्कार कही जाती है। एक ही समय में यह आत्म-साक्षात्कार भी है और ब्रह्म-साक्षात्कार भी है। यह सत् है, यह प्रज्ञा है, यह शक्ति है, यह आनन्द है, यह पूर्णत्व है, यह अमरत्व है, यह मोक्ष है, यह कैवल्य है। यही जीवन का लक्ष्य है और वह पथ है जिसका उदात्त वर्णन माण्डूक्योपनिषद् में अत्यन्त सुन्दर रूप से किया गया है।

माण्डूक्योपनिषद् सभी उपनिषदों का सार-रूप है। इसका अध्ययन और समीकरण ही पर्याप्त है मोक्ष-प्राप्ति के लिए। ‘माण्डूक्यमेकमेवालं मुमुक्षूणां विमुक्तये’ ब्रह्मसाधकों को मोक्ष प्रदान करने के लिए केवल माण्डूक्योपनिषद् ही पर्याप्त है यदि इसे समुचित रूप से आत्मसात् कर लिया जाये तो! केवल श्रवण करके विस्मरण ही पर्याप्त नहीं है। आपने माण्डूक्योपनिषद् की प्रशंस्य, अतिशोभन व्याख्या का श्रवण किया है और मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि आप इस ज्ञान को आत्मसात् करें और इसे अपने व्यावहारिक जीवन का अंग बनायें। यह दुर्लभ, अलौकिक ज्ञान जिसे प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है, व्यर्थ न जाने पाये। इसे हवा में न उड़ा देना, अरण्य में लुप्त न कर देना। कितने ही उच्च स्वर में आप चीखें-चिल्लाएँ, यह ज्ञान प्राप्त करना आपके लिए अत्यन्त दुष्कर कार्य होगा। यह ऐसा विरल वैभव है इस विश्व में। आपने जब इसे प्राप्त कर ही लिया है, तो इसे खो मत देना और भूल मत जाना कि आपके पास यह ज्ञान है। गहन चिन्तन और ध्यान से इसे आत्मसात् करें। इस संसार में रहते हुए इसे जीवन का व्यावहारिक साधन बनायें ताकि आपका जीवन दिव्य जीवन में परिवर्तित हो सके, आप इस धरा के सच्चे देव बन जायें जो मनुष्य रूप में यहाँ विहार कर रहे हैं और अपनी सत्ता से ही सर्वत्र शान्ति का प्रसार कर रहे हैं, आप भूदेव बन जायें।

सच्चा ब्राह्मण वही है जो इस रहस्य को जानता है, जिसे यह ज्ञान है, जो इस ज्ञान को जीता है अर्थात् जिसका जीवन ही ज्ञानमय हो गया है, जिसके लिए यह ज्ञान अभ्यास है, जिसके लिए कर्म इस ज्ञान से

पृथक् नहीं रहा, अभेद हो गया है ज्ञान के साथ, जहाँ कर्म और ज्ञान भ्रातृवत् आलिंगन करते हैं, जहाँ कर्म और ध्यान में कोई घर्षण या विरोध नहीं है, जहाँ जीवन ही साक्षात्कार बन जाता है, कर्म ही पूजा बन जाता है, ईश्वर-चिन्तन बन जाता है, जहाँ स्वयं अस्तित्व ही इस पृथ्वी का परम सुख, धन्यता बन जाता है, जहाँ जीवन ही शिक्षा बन जाता है, जहाँ दृष्टान्त ही उपदेश बन जाता है और जहाँ मनुष्य इस धरा पर ईश्वर का प्रतिनिधि बन जाता है। यही है गौरवमयी शुभ वार्ता माण्डूक्योपनिषद् की। परमात्मा से

मेरी प्रार्थना है कि वे इस ज्ञान की अवधारणा से, स्मृति से आपको आनन्दित करें ताकि दैनिक जीवन में कभी आप इसका विस्मरण न करें। छान्दोग्योपनिषद् के अनुसार यह ऐसा अद्भुत ज्ञान है जिसकी तुलना विश्व-भर की सम्पदा से नहीं हो सकती। विश्व-भर की सम्पदा से भी यह कहीं अधिक उत्कृष्टतर है। यह ज्ञान मर्त्य जीवन की दासता से परित्राण करने वाला है, उद्धारक है, मोक्ष का सहज साधन है, नित्य सत्ता है और आपके जीवन का परम लक्ष्य है।

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

एक सामान्य शिकायत

लोगों की सदा यह शिकायत रहती है कि गम्भीर प्रयत्न तथा सच्चा अभ्यास करने के बावजूद भी उन्हें ब्रह्मचर्य में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती है। वे अनावश्यक रूप से सन्नस्त तथा निरुत्साहित हो जाते हैं। यह एक भूल है। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी एक मापी-यन्त्र है। यह बहुत ही सूक्ष्म है। आध्यात्मिकता-मापी-यन्त्र चित्त-शुद्धि के विकास की लघुतम मात्रा भी बतलाता अथवा व्यक्त करता है। शुद्धता की मात्रा को समझने के लिए आपको विशुद्ध बुद्धि की आवश्यकता है। प्रबल साधना, ज्वलन्त वैराग्य तथा ज्वलन्त मुमुक्षुत्व उच्चतम कोटि की शुद्धि शीघ्र प्राप्त कराते हैं।

यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन आधा घण्टा भी गायत्री अथवा प्रणव का जप करता है, तो आध्यात्मिकता-मापी-यन्त्र उसके ब्रह्मचर्य की सूक्ष्म मात्रा तत्काल बतलाता है। आप अपनी मलिन बुद्धि के कारण इसे नहीं देख पाते हैं। एक या दो वर्ष तक नियमित रूप से साधना कीजिए और तब अपने मन की तत्कालीन अवस्था की उसके पूर्ववर्ती वर्ष की अवस्था से तुलना कीजिए। आपको निश्चय ही बहुत बड़ा परिवर्तन मिलेगा। आप पूर्वापेक्षा अधिक शान्ति, अधिक पवित्रता तथा अधिक नैतिक शक्ति अथवा बल का अनुभव करेंगे। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। क्योंकि प्राचीन दुष्ट संस्कार बहुत ही प्रबल होते हैं; अतः मानसिक शुद्धता में कुछ समय लग जाता है। आपको हतोत्साह नहीं होना चाहिए। कभी निराश न हों। आपको अनादि काल के संस्कारों के विरुद्ध संघर्ष करना है। अतः इसके लिए अत्यधिक प्रयास की आवश्यकता है।

स्वामी शिवानन्द

मन की दिशा आप निश्चित करें

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

उन श्रद्धेय गुरुदेव को हम प्रेमपूर्वक नमन करते हैं जो प्रत्येक प्रातः आपको अपने निकट, अपने सान्निध्य में खींच लेते हैं जिससे की आप अपनी प्रातः आध्यात्मिक, सात्त्विक और योगमय ढंग से आरम्भ करें, कि आप सदा-विद्यमान दिव्यता के आन्तरिक ध्यान में, मौन ध्यान में रहते हुए दिवस में प्रवेश करें, दिन का आरम्भ लाभपूर्ण ढंग से करें।

जैसे ही आप निद्रा से जाग्रत अवस्था में प्रवेश करते हैं, मन अपना कार्य आरम्भ कर देता है। यह आप पर निर्भर करता है कि यह कार्य किस दिशा में होगा, क्या मन को अपने आपके ऊपर ही छोड़ दिया जायेगा हहहआपके भीतर उठने वाले सपनों, आपकी वासनाओं में ही अस्त-व्यस्तहहअथवा क्या इसे श्रेष्ठ, उदात्त ऊर्ध्वगामी दिशा दी जायेगी? निश्चित रूप से प्रतिदिन प्रातःकाल यहाँ बैठ कर आप यही करते हैं।

आप समस्त अन्धकार से परे ज्योतियों की परम ज्योति के रूप में मौन द्रष्टा हैं। आप जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्तिहहहतीनों अवस्थाओं को देखने वाले मौन साक्षी हैं। आप चेतना स्वरूप में तीनों अवस्थाओं में प्रकाशित होते हैं। आप ही हैं जिसने यह निर्णय लेना है कि 'मन' कहलाने वाले इस महान् उपकरण, जो कि दिव्य पराशक्ति से भिन्न नहीं है, इससे आपने क्या करना है। आप ही ने निश्चित करना है कि आज आप इस शक्ति का उपयोग कैसे करने जा रहे हैं, और यह निर्णय जाग्रत अवस्था में जाग्रत चेतना के प्रथम भाग में लिया जाता है।

इसीलिए इसका अत्यन्त महत्त्व है कि जब आन्तरिक प्रार्थना और ध्यान की आधे घण्टे की अवधि पूर्ण होती है और आप आँखें खोलते हैं, तो सर्वप्रथम आप प्रार्थना करते हैं :

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते
सहस्रकोटियुगधारिणे नमः ॥

आप उस परब्रह्म को नमन करते हैं जो अनन्त है, जो शाश्वत है। वह आपके सम्मुख सहस्रों रूपों में प्रकट होता है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक रूप उन्हीं का रूप है। आप नेत्र खोलते हैं और उदित होते दिवस को निहारते हैं, जो-कुछ भी आपको दृष्टिगोचर होता है, सब-कुछ दिव्य है, कुछ भी प्रपंच नहीं। सब आत्म-तत्त्व है, कुछ भी भौतिक पदार्थ नहीं है।

आप उस जगत् में रहते हैं जो शत-प्रतिशत आध्यात्मिक है। समस्त दिशाओं में, सभी नाम-रूपों में आप एकमात्र उस शाश्वत, अनन्त सत्ता को देखते हैं। इस प्रकार आपका क्षणमात्र के लिए भी भगवान् के साथ सम्बन्ध-विच्छेद नहीं होता। आन्तरिक रूप से आप ध्यान-धारणा द्वारा उनसे सम्बन्ध बनाये रखते हैं। बाह्य रूप में आप दृष्टिकोण के द्वारा, दिव्य जागरूकता और दिव्य भावना के द्वारा उनका चिन्तन करते रहते हैं। जड़-चेतन, प्रत्येक वस्तु-पदार्थ में आप उन्हीं को देखते हैं। आपमें यह ऐसी दृष्टि, ऐसा भाव,

ऐसा दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए ही मौन ध्यान की परिसमाप्ति इस प्रार्थना सहित होती है।

उन्हीं परब्रह्म में आप निवास करते हैं, कार्यशील होते हैं और उन्हीं से आपका अस्तित्व है और उन्हीं में अपनी स्थिति रखते हुए आप समस्त लौकिक व्यवहार सम्पन्न करते हैं। आप कहाँ हैं? क्या आप समाधि हाल में हैं? नहीं, आप भगवान् में हैं। क्या आप ऋषिकेश में हैं? नहीं, आप भगवान् में हैं। क्या आप भारत में हैं? नहीं, आप भगवान् में हैं। क्या आप इस पृथ्वी पर हैं? नहीं, आप भगवान् में हैं। क्या आप विश्व में हैं? यदि यहाँ तक आपकी चेतना का विस्तार हो गया है, तो आप भगवान् में स्थित हैं और भगवान् आपमें निवास करते हैं।

एक साधक के सम्बन्ध में सत्य यह है। साधक वह है जो भगवान् में स्थित हो, क्योंकि यह समाधि हाल, ऋषिकेश, भारत, पृथ्वी और यह विश्व सब भगवान् में ही हैं। यही वह आयाम है जो कि आपके हृदय में जाग्रत होना चाहिए। यह दृष्टिकोण है, जो आपके भीतर अनुप्राणित होना चाहिए। तब फिर आप भले ही कहीं भी हों, कुछ भी करें, आप भगवान् में और भगवान् आपमें हैं। तब आप इस धरती पर नहीं, दिव्य साम्राज्य में निवास करते हैं।

और जब आप दिव्य साम्राज्य में निवास करते हैं, तो दिव्य होना, दिव्यता अनुभव करना, दिव्यता-पूर्ण कार्य करना आपके लिए सहज-स्वाभाविक हो जाता है। यह बनावटी प्रयास नहीं रहता। यह कुछ ऐसा नहीं होता, जिसको अपने भीतर उत्पन्न करने का, स्वयं में लाने का आपको प्रयत्न करना पड़े, आपको स्वयमेव ज्ञात हो जाता है कि यह आपके जीवन का यथार्थ है, सत्य है।

अतः आधा घण्टा ध्यान के पश्चात् आप जो-कुछ भी उच्चारण करें, उसे अपने हृदय, मन और सम्पूर्ण चेतना में परिव्याप्त होने दें। और अपना सम्पूर्ण दिवस उसी दृष्टिकोण से ओत-प्रोत होने दें। आप यह जान लें कि आप जो कोई भी हैं, भौतिक रूप से भी आप भगवान् में ही हैं। केवल भाव में ही नहीं, स्थूल रूप में भी आप भगवान् में ही हैं; क्योंकि भगवान् के अतिरिक्त अन्य किसी का अस्तित्व ही नहीं है।

‘वह’ केवल अन्तर्निहित आत्म-तत्त्व ही नहीं हैं। जब वह पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश में हैं, तो वह नाम और रूपों में भी हैं। जिस व्यक्ति को यह बोध नहीं है, उसे तो नाम और रूप को अलग हटा कर आन्तरिक तत्त्व को देखना पड़ेगा। किन्तु जब व्यक्ति इस बोध से पूर्ण हो जाता है, तब सब-कुछ, यहाँ तक कि नाम और रूप भी भगवान् और केवल एकमेव भगवान् ही हो जाते हैं।

यह दृष्टिकोण है, अपने सम्पूर्ण जीवन को दिव्य बनाने का। अपने समस्त जीवन को आध्यात्मिक बनाने का यह रहस्य है। आप जहाँ भी जाते हैं, सब-कुछ स्वयमेव यौगिक हो जाता है। जहाँ-कहीं भी आपका मन जाता है, यह भगवान् में ही होता है, यह सब जगह भगवान् से ही संयुक्त रहता है। सब-कुछ योग की एक सतत प्रक्रिया बन जाता है। जो दृष्टिकोण आपके मन-मन्दिर में बना होता है, केवल वही आप बाह्य जगत् में निहारते हैं।

भगवान् में निरन्तर निवास करने का यह ही रहस्य है। सर्वव्यापक, सर्वदा विद्यमान दिव्यता आपको ऐसी ही दृष्टि प्रदान करे तथा आप दिव्य जीवन जीने में सफलता प्राप्त करें और इस प्रकार शाश्वत परम आनन्द व शान्ति इसी शरीर में रहते हुए प्राप्त कर लें!

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

स्वारथ्य और ब्रह्मचर्य

परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

मानव-शरीर

मनुष्य का शरीर हड्डी, मांस, वसा और रक्त से बना है। छाती और पेट के अन्दर कई प्रकार के अवयव हैं। उनमें खाना पहुँचता है और हजम होता है। मूत्राशय में मूत्र रहता है। यकृत में पित्त पैदा होता है। मन दिमाग में रहता है। वह सोचने और अनुभव करने का काम करता है।

अमर आत्मा हृदय में बसता है। दोनों आँखें खिड़की हैं, जिनके द्वारा आत्मा देखता है। शरीर मरता है; पर आत्मा बना रहता है। तुम वस्तुतः अमर आत्मा हो।

सदा शुद्ध और पवित्र रहो

सफाई देवत्व के समतोल है। सफाई रखने से शरीर में फुरती बनी रहती है। साफ रहोगे, तो स्वस्थ रहोगे। प्रतिदिन ठण्डे पानी से नहाओ। दाँत अच्छी तरह से साफ करो। स्वच्छ वस्त्र पहनो। अपने कपड़े रोज धोओ। विचार, वाणी और कर्म में भी सदा स्वच्छ रहो।

अपना कमरा खूब साफ करो। कूड़ा, धूल और रद्दी को हटाओ। रोज झाड़ू लगाओ। कई रोग भाग जायेंगे।

साफ रहोगे, तो तुम्हारे शिक्षक तुम्हें पसन्द करेंगे। सब लोग तुम्हें चाहेंगे। तुम्हारा व्यक्तित्व बढ़िया दीखेगा। गन्दे मनुष्य से सब घृणा करते हैं।

अपनी नोटबुक साफ रखो। प्रश्नों के उत्तर साफ लिखोगे, तो परीक्षक प्रसन्न होगा। वह तुम्हें विशेष योग्यता के अंक भी देगा।

छह उत्तम वैद्य

धूप, पानी, हवा, भोजन, व्यायाम और आरामहृह्ये छह उत्तम वैद्य हैं। इस बात से कोई इनकार नहीं कर

सकता। ये वैद्य तुमसे एक भी पैसा नहीं माँगेंगे। इनका इलाज सदा निःशुल्क होता है। इनसे मुफ्त इलाज कराओ और सुखी तथा स्वस्थ रहो।

धूप-स्नान बड़ा अच्छा टानिक है। उससे अद्भुत शक्ति मिलती है। उससे विटामिन डी मिलता है और सभी चर्मरोग मिटते हैं। धूप बड़ी सस्ती कीटाणुनाशक औषध है। वह सभी विषैले कीटाणुओं को नष्ट कर देती है। प्रतिदिन धूप में कुछ समय नंगे बदन रहो। शुद्ध वायु तुम्हारे खून की सफाई करेगी।

शुद्ध जल से स्वास्थ्य बनता है। हलके और पुष्टिकर आहार से तुम स्वस्थ और बलवान् बनोगे। सड़ी-गली चीजें, सड़े और कच्चे फल कभी न खाना। नियमित रूप से व्यायाम करो। आराम करो।

अपच का इलाज

आम खा कर अपच हो जाये, तो दूध पीओ। घी अधिक खाने से अपच हो जाये, तो नींबू का रस लो। केला खाने से अपच हो जाये, तो साँभर नमक खाओ।

केक खाने से अपच हो, तो गरम पानी पिओ। दूध से अपच हुआ हो, तो मट्टा पिओ। कटहल से अपच हुआ हो, तो केला खाओ।

नारियल से अपच हो गया हो, तो थोड़ा-सा चावल खाओ। दाल से अपच हो, तो थोड़ी चीनी खाओ। पानी का अपच हो, तो जरा शहद लो। खूबानी फल से अपच हो, तो खूब पानी पिओ। (अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

योग द्वारा स्वास्थ्य :

सीत्कारी

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज



(श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज)

विधि

मुँह खोलें, जिह्वा को ऊपर की ओर करके मुँह के अन्दर ही मोड़ें, जिससे जिह्वा का अग्रभाग ऊपरी तालु को स्पर्श कर सके और सीत्कार की ध्वनि के साथ-साथ मुँह के द्वारा पूरक करें। पूरक के पश्चात् जिह्वा को अपनी मूल स्थिति में ले आयें। जितनी देर तक सुखपूर्वक सम्भव हो, उतनी देर तक वायु को रोके रखें और तब नासारन्ध्रों के माध्यम से शनैः-शनैः रेचक करें। यह छह बार दोहरायें और धीरे-धीरे संख्या को बढ़ायें।

लाभ

यह प्राणायाम शरीर को शीतल करता, नेत्रों और कानों को प्रशमित करता और रक्त को शुद्ध करता है। यह तृषा बुझाता और क्षुधा को शान्त करता है। यह जीर्ण मन्दाग्नि, प्लीहा की सूजन, विभिन्न पुराने चर्मरोगों, हलके ज्वरों तथा पित्त और कफ दोषों को आरोग्य करता है।

(अनुवादक : श्री शिवगोविन्द गुप्त)

प्रभु-कृपा और गुरु के आशीर्वाद तभी लाभप्रद होते हैं यदि आपके अपने सच्चे और गहन प्रयत्न द्वारा उनका अनुसरण हो। जो आवश्यक है, वह हम क्यों नहीं करते? केवल उस एक आवश्यक कार्य जिसके लिए हम यहाँ आये हुए हैं, को छोड़ कर अन्य दर्जनों विभिन्न कार्यों में हम व्यस्त रहते हैं। इसीलिए ईश्वर-साक्षात्कार लुप्तप्राय हो गया है।

जो आवश्यक है, वह हमें करना ही पड़ेगा। ईश्वर की कृपा है, यह मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ। यहाँ आपमें से प्रत्येक के जीवन में ईश्वर की कृपा पर्याप्त मात्रा में है, यह मैं बलपूर्वक निर्भीकता से कहता हूँ। पूर्ण विश्वास के साथ मैं इस सत्य का समर्थन करता हूँ कि आप आशीर्वादित हैं। आपके जीवन में प्रभु की दिव्य कृपा अपार मात्रा में है और गुरुदेव का वरदहस्त, उनकी दयापूर्ण दृष्टि आप पर है; इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। अब शेष आप पर है कि आप उस अनुकम्पा और आशीर्वाद की विद्यमानता को पहचानें और जो आवश्यक है, वह करें।

स्वामी चिदानन्द

बाल-स्तोत्र :

यह पाप है

स्वामी रामराज्यम्

शेख सादी एक महान् सन्त थे। उनके बचपन की घटना है। एक बार वह अपने पिता के साथ मक्का की यात्रा पर गये। सभी यात्री आधी रात को उठ कर खुदा की बन्दगी (भगवान् की उपासना) करते थे। एक बार केवल शेख सादी और उनके पिता ही आधी रात को बन्दगी करने के लिए उठे। अन्य यात्री थके होने के कारण सोते ही रह गये।

बन्दगी करने के बाद शेख सादी ने अपने पिता से कहाहह “देखो, ये लोग कितने आलसी हैं! बन्दगी करने के लिए भी उठने को तैयार नहीं हैं।”

पिता को यह बात अच्छी नहीं लगी। बोलेहह “अच्छा होता, तू भी न उठता। कम-से-कम दूसरों की बुराई करने से तो बच जाता। क्या इसीलिए बन्दगी की जाती है?”

इस घटना से मिलती-जुलती एक दूसरी घटना है।

एक मौलवी जी अपने दोस्त के साथ सुबह की नमाज पढ़ कर मसजिद से घर लौट रहे थे। गरमी के दिन थे। लोग अपने-अपने घरों के सामने चारपाइयों पर सोये हुए थे। उनके दोस्त ने कहाहह “सबेरा सोने के लिए होता है कि खुदा की याद करने के लिए? इन लोगों को नरक में भी जगह नहीं मिलेगी।”

मौलवी जी ने कहाहह “दूसरों की बुराई करके तूने मेरी नमाज खराब कर दी। मैं मसजिद वापस जा रहा हूँ। दोबारा नमाज पढ़ूँगा। अब तू अपने रास्ते पर जा।”

दूसरों की बुराई पर ध्यान दे कर उनकी बुराई करना पाप है। यह पाप-कर्म करने से भगवान् की पूजा निष्फल हो जाती है। □ □ □

केवल सत्य ही हमें मुक्ति दे सकता है। असत्य मोक्ष प्रदान नहीं कर सकता। भ्रान्तिपूर्ण चिन्तन एक बन्धन है। मन गलत चिन्तन का सिंहासन है। हमें यह पता नहीं चलता; किन्तु वास्तविकता यही है। इसलिए आपके और उस अन्तर्निहित परम सत्ताहहप्रभु (जो कि आपके निकटतम से भी निकट विद्यमान है) के बीच में मूल बाधा यह मन ही है। अतः विनम्रता और सरलता पूर्वक, सच्चे विश्वास और पूर्ण श्रद्धा सहित तथा मन द्वारा रचित गलत धारणाओं (जो कि माया जनित हैं) को एक ओर छोड़ कर हमें भगवान् की ओर बढ़ना चाहिए।

स्वामी चिदानन्द

समस्या बन जाने के लिए मन नहीं दिया गया

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

प्रकृति के इस संसार में रजोगुण की प्रधानता होने के कारण सदैव गतिशीलता रहती है। रजोगुण गति है; यह अस्थिरता है, यह सक्रियता है, यह आपके स्वभाव का एक भाग है; किन्तु यह आपका निज-स्वरूप, जो कि परिपूर्ण है, का हिस्सा नहीं है। परिपूर्ण में कोई गतिशीलता नहीं है; क्योंकि उसमें गति की आवश्यकता ही नहीं है। उसमें कुछ पाना, कुछ प्राप्त करना नहीं है; क्योंकि वह नित्य-प्राप्त, नित्य-परिपूर्ण सत्ता है। इसकी परिपूर्णता कभी कम नहीं की जा सकती, कभी परिवर्तित नहीं की जा सकती; क्योंकि यह सत्य है। जिसे बदला जा सकता हो, वह सत्य नहीं होता। जो सत्य है, वह अपरिवर्तनीय है, अटल है।

इस बात को जानते हुए कि जीवन में सक्रियता और गतिशीलता अनिवार्य है, इसका एक आवश्यक और अपरिहार्य हिस्सा है, एक विवेकशील साधक गहराई से चिन्तन करता है और बुद्धिमत्तापूर्वक उस दिशा का चयन करता है जो इस अनिवार्य सक्रियता, इस अपरिहार्य गतिशीलता के प्रवाह को उस ओर मोड़ दे कि यह उसे वृद्धि और विकास का रूप दे दे जो कि सत्यम् है, शिवम् है और सुन्दरम् है, जो धन्य है, पावन है, उदात्त और दिव्य है। वह सब, जो सर्वोच्च परिपूर्णता का द्योतक है।

साधक के मनोभाव का पूरा बल इसी पर रहता है। यह ऊर्ध्वगमन है; न तो यह ठहराव है, न ही अधोगमन और न ही यह बिना कहीं भी पहुँचे एक ही स्थान पर चक्कर काटते रहना है। यह व्यर्थ की क्रियात्मकता नहीं है; यह अनुत्पादक कार्यशीलता नहीं है; यह निरर्थक और

निष्फल क्रिया नहीं है। एक साधक का जीवन (उसके मन, वाणी और कार्य, सब) रचनात्मक है, सृजनात्मक है। यह सही दिशा में है; क्योंकि इसको जान-बूझ कर भले जीवन की ओर, परम लक्ष्य की ओर उन्मुख करके प्रवाहित किया गया है।

यह विकास-क्रम का सार है। यह उन्नति का और सही अर्थों में जीवन का सारतत्त्व है; क्योंकि लक्ष्य-प्राप्ति के लिए जीवन एक महान् निधि है। परिपूर्णता की ओर की गतिशीलता ही जीवन का सार है; क्योंकि यह परिपूर्णता प्रत्येक जीवात्मा में अन्तर्निहित है। जीवात्मा अपने मूल स्वरूप में दिव्य है। यह सीमाओं में आबद्ध परिपूर्णता का प्रकटीकरण है। इन उपाधियों को, इस सीमाबद्धता को दूर करके, उस परिपूर्णता का प्रकटीकरण करना, जो कि वास्तव में पहले से ही विद्यमान है, यही आध्यात्मिकता का, योग का, साधना का, अभ्यास का और सच्चे जीवन का सारांश है।

आपकी सहज बुद्धि आपके सम्बन्ध में यह सत्य आपको बताती है, किन्तु हम ही उसे ठीक से समझने को तैयार नहीं हैं। जीवात्मा के सम्बन्ध में सत्य यह है कि यह अपरिवर्तनीय परिपूर्णता है, यह अविनाशशील आनन्द-स्वरूप है, यह आनन्द प्रकृति में आवेष्टित है। एक बार पुनः प्रकृति से परे जाना और जो वास्तव में है, उसी स्वरूप में स्थित होनाहहयह एक आवश्यक कार्य है जो कि करणीय है। किन्तु स्वयं को प्रकृति से मुक्त करना है, यह कहना भी सही नहीं है। यह मानवीय भाषा की सीमितता के कारण है; क्योंकि जब ब्रह्म को बन्धन नहीं है (क्योंकि

ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य तो कोई है ही नहीं जो ब्रह्म को बाँधेगा), तब फिर बन्धन का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

यदि दो वस्तुएँ हों, तो एक वस्तु दूसरी वस्तु को बाँध सकती है। किन्तु ब्रह्म के परिपूर्ण, अद्वितीय और एकमेव होने के नाते बन्धन का प्रश्न ही नहीं उठता। और जीवात्मा क्योंकि ब्रह्म-तत्त्व से भिन्न नहीं है, इसलिए जीवात्मा के लिए बन्धन का कोई अर्थ ही नहीं है। अतः उतनी स्वयं को आबद्ध करने वाली प्रकृति से मुक्त होने की बात नहीं है, प्रत्युत स्वयं के बन्धन हीन स्वरूप को जानने की, अपनी अबाधित सत्ता को जानने की आवश्यकता की ही बात है।

आप प्रकृति के द्वारा प्रभावित नहीं हो सकते। प्रकृति भी है, किन्तु वह असहाय है। आपके ब्रह्म-तत्त्व को, आपके निज-स्वरूप, नित्य-मुक्त, नित्य-परिपूर्ण अवस्था को प्रभावित करने की शक्ति प्रकृति में नहीं है। इसलिए यह जागरूकता कि मैं नित्य-मुक्त, नित्य-परिपूर्ण, नित्य-शुद्ध हूँ, यही व्यक्ति का सारतत्त्व है। तथा साधना या योग, या अभ्यास का अर्थ है ब्रह्मव्यक्ति के इस सारतत्त्व के विपरीत जितनी भी वृत्तियाँ हैं, उन सबका बहिष्कार करते जाना; आपमें मन और बुद्धि के रूप में अन्य जितनी भी वृत्तियाँ आपके निकट आती रहती हैं, उन सबका सशक्त और अबाध, सदा-सक्रिय विचार और विवेक के द्वारा तथा प्रकृति के साथ स्वयं की पहचान न बनने देने के द्वारा, निरन्तर बहिष्कार करते रहना।

सच्ची साधना की यह आन्तरिक क्रिया-विधि है। जीवात्मा को यह मन समस्या बन जाने के लिए नहीं दिया गया। मन तो अनेकत्व की समस्या के समाधान के लिए दिया गया था। क्योंकि अनेकत्व मिथ्या है। एक, और केवल मात्र एक ही सत्य है। इसलिए इस अनेकत्व के भ्रम

को समाप्त करने के लिए मन दिया गया था। दुर्भाग्यवश हमारी असावधानी के कारण, हमारी निष्क्रियता के कारण और अपनी चेतना के भीतर विद्यमान अपने सच्चिदानन्द स्वरूप को प्रकटीकृत न करने के कारण हमने मन को अपने लिए समस्या बन जाने दिया है। जिस प्रकार आपका श्वास आपके शरीर में अटूट निरन्तरता से प्रवाहित होता रहता है, इसी प्रकार आपके व्यक्तित्व के आन्तरिक चिदाकाश पर सतत अटूट रूप से सच्चिदानन्द चेतना प्रकटित होती रहनी चाहिए। चित् आनन्द का प्रकाश सदा पड़ते रहना चाहिए। इस प्रकार देदीप्यमान होते रहना चाहिए कि आप सदा सत्य की जागरूकता की अवस्था में बने रहें।

यह सतत रूप से होना चाहिए; और इसमें किसी परिश्रम की भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह तो सदा वहाँ विद्यमान है ही, यह सहज-स्वाभाविक रूप से वहीं है। आवश्यकता केवल निष्क्रियता, आलस्य, अकर्मण्यता, उपेक्षा भावह्रहतमोगुण को दूर रखने की है। यह एक आवश्यक करणीय कार्य है, अतः प्रकृति के रजोगुण का परम सत्ता की दिशा में सक्रिय, उद्देश्यपूर्ण प्रवाह होना चाहिए। समस्त आलस्य, अकर्मण्यता और उपेक्षा भाव को चीरते हुए आपके सम्पूर्ण अन्तःकरण का सक्रिय अग्रगमन होना चाहिए।

इस उद्देश्य के लिए उठें और जुट जायें! इस लक्ष्य के लिए 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत' (उठें, जागें, महापुरुषों के सान्निध्य में ज्ञान प्राप्त करें)। यह पुनरावर्ती शाश्वत पुकार है। इस पुकार को सुनें! इसका उत्तर दें। यह जो कह रही है, वह करें और स्वयं को धन्य कर लें! यही जीवन है। इसके लिए ही हम यहाँ आये हुए हैं। (अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

‘शिवानन्द होम’ द्वारा सेवा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय अपनी विनम्र सेवा ‘शिवानन्द होम’, जो कि लक्ष्मणझूला के पास तपोवन में स्थित है, के द्वारा निरन्तर कार्यरत है। यह असहाय रोगियों के लिए चिकित्सीय-सुविधाओं से पूर्ण एक घर है।

“मेरी आँखें बन्द कर दीजिए, मैं जा रहा हूँ, मैं अपने घर जा रहा हूँ, ‘वह’ बुला रहे हैं मुझे!” रोगी की यह अन्तिम प्रार्थना सुनते ही पावन गंगाजल उसके मुख में डाल दिया गया, और सचमुच ही कुछ ही पल में वह शान्तिपूर्वक शरीर छोड़ गया। कुछ ही सप्ताह पहले इस बाबा जी को असाध्य फुफ्फुसीय तपेदिक और हृदय रोग से ग्रसित अवस्था में भरती किया गया था। यह गुरुदेव के आश्रम के सामने सड़क पर से असहाय, जल-अल्पता से ग्रसित और अत्यधिक जर्जर वृद्धावस्था में पड़ा हुआ उठा कर लाया गया था। प्रार्थना करें कि उसकी आत्मा परमात्मा से एकाकार हो कर परम शान्ति और आनन्द में निवास करे! ॐ श्री गुरुदेवाय नमः!

इससे एक बिलकुल अलग कहानी ‘शिवानन्द होम’ के एक अन्य अन्तेवासी की है, वह भी अपने घर वापिस लौटा; किन्तु यह लौटना, अपने घर-संसार में लौटना था। उसे अपने परिवार में पुनः सुख-आनन्द पूर्वक स्वागत मिला। यह आश्चर्यजनक सच्ची कहानी

उस १३ वर्षीय मानसिक रूप से मन्दमति बालक की है जो गूंगा था, किन्तु भगवान् ने उसकी पुकार सुन ली थी। एक दिन वह खेलते समय गिर गया, उसकी टाँग में थोड़ी सी चोट लगी थी, किन्तु सीढ़ियों से नीचे आते समय जब वह बहुत ऊँचा चिल्ला रहा था तो सौ मीटर की दूरी पर छत पर काम कर रहे एक मजदूर ने उसकी आवाज़ सुन ली और पहचान भी ली, क्योंकि संयोगवश वह उस लड़के का चाचा था।

अगले दिन जब वह उसके माता-पिता को ले कर आया तो उसकी आँखों से आनन्दाश्रु बह रहे थे, और माँ का हृदय भावविह्वल अवस्था में झूम रहा था। सम्भवतया जब यह परिवार, काम के समय एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहा था, तब उनका यह बच्चा उनसे अलग छूट गया था। यह तो एक रहस्य ही बना हुआ है कि माता-पिता से बिछुड़ने के बाद और पाँच मास पूर्व ‘शिवानन्द होम’ में भरती होने से पहले का दीर्घ काल इस बच्चे ने कहाँ और कैसे व्यतीत किया। किन्तु आँखों से परे जो हम देख नहीं पाते, जान नहीं पाते, उसी सब अज्ञात रहस्य के पीछे दिखायी देता है वह उस परम पिता का अपनी सन्तान के प्रति अथाह, कल्पनातीत प्रेम!

अपने घर-परिवार से बिछुड़ जाने पर, विशेष रूप से ऐसी महिलाएँ जो मानसिक विक्षिप्तता का भी

शिकार हों, की घर-परिवार से पुनर्मिलन की बहुत ही कम सम्भावना रहती है। मानसिक रोग को भी एक कलंक मान लिया जाने के कारण ही यह घर-परिवार और सम्बन्धियों द्वारा त्याग दिये जाने का कारण बना हुआ है। इसके साथ ही सड़क पर एकाकी छोड़ दिये जाने के कारण मानसिक रुग्णावस्था का शिकार हो जाना पाया जाता है।

सड़क से उठा कर लायी गयी भरती की जाने वाली महिलाएँ प्रायः मानसिक तनाव, भ्रमित और विचित्र स्वभाव वाली अवस्था में पायी जाती हैं। कुछ

तो इनमें से ऐसी देखी गयी हैं जो पहले कभी मानसिक चिकित्सालय में भी रह चुकी हैं। यहाँ 'होम' के वातावरण में आने के बाद यद्यपि उनमें पर्याप्त परिवर्तन और सुधार आ जाता है, तो भी ठुकरा दिये जाने की पीड़ा तथा बच्चों से अलग और परित्यक्त अवस्था की दुःखद स्थिति उनकी मूक दृष्टि में मानो लिखी रहती है। उस सर्वशक्तिमान् परमात्मा से प्रार्थना है कि वह अपनी अपार कृपा-दृष्टि द्वारा प्रत्येक को अपने दिव्य स्पर्श द्वारा शान्ति और धैर्य प्रदान करें! ॐ श्री सद्गुरुणाय नमः!

“भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।” स्वामी शिवानन्द

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय में वेद-पारायण

६ जुलाई २००९ को आश्रम मुख्यालय में पावन गुरुपूर्णिमा के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम के मंगलाचरण के रूप में तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के प्रथम आराधना दिवस के महोत्सव के ही एक अंग के रूप में एक अति अद्भुत भव्य कार्यक्रम हुआ।

आन्ध्र प्रदेश से दो पण्डितहहश्री एल. रामकृष्ण प्रसाद अवधानी भद्राचलम् से तथा श्री पूर्णेश शास्त्री राजमुंड्री से वेद-पाठ करने के लिए आमन्त्रित किये गये। इस वेद-पारायण में शुक्ल यजुर्वेद की कण्व शाखा के महत्त्वपूर्ण सूक्त, ईशावास्योपनिषद् का कुछ

भाग तथा शान्ति-मन्त्र सम्मिलित किये गये थे। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने संक्षिप्त व्याख्या सहित श्रोताओं को विभिन्न भागों का परिचय दिया। पावन वेद-मन्त्रों के पारम्परिक भव्य गान का सभी श्रोताओं ने भरपूर आनन्द उठाया तथा समस्त वातावरण प्राचीन काल की पावन तरंगों से स्पन्दित हो उठा।

दिव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज तथा महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने पण्डितों को सम्मानित किया।

आश्रम मुख्यालय में श्री गुरुपूर्णिमा, साधना सप्ताह तथा पुण्यतिथि आराधना महोत्सव

इस वर्ष पुनीत श्री गुरुपूर्णिमा ७ जुलाई २००९ को तथा परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की ४६ वीं पुण्यतिथि आराधना १६ जुलाई

२००९ को थी। आश्रम मुख्यालय में यह दोनों महोत्सव मनाये गये तथा मध्यवर्ती ८ से १४ जुलाई की ७ दिनों की अवधि में भव्य रूप में साधना सप्ताह

आयोजित किया गया। समस्त कार्यक्रम स्वामी शिवानन्द सत्संग भवन (ऑडिटोरियम) में आयोजित किया गया। इस वार्षिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए दूर-दूर से भारी संख्या में पधारे हुए साधक-भक्तों की उपस्थिति से भवन पूरी तरह से भरा हुआ था।

गुरुपूर्णिमा का शुभारम्भ ब्राह्ममुहूर्त की प्रार्थनाओं और ध्यान सत्र से हुआ। मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी आत्मस्वरूपानन्द जी महाराज ने गुरु और गुरुपूर्णिमा के महत्त्व पर प्रवचन दिये। प्रातःकालीन सत्संग के तुरन्त बाद प्रभातफेरी थी। यज्ञ-शाला में विश्व-शान्ति और सर्वकल्याण हेतु यज्ञ किया गया।

पूर्वाह्न में समाधि मन्दिर में परम पूज्य गुरुदेव की पावन समाधि की महापूजा की गयी। उसके उपरान्त सत्संग भवन में श्री गुरुपादुकाओं की महापूजा हुई, और फिर संक्षिप्त सत्संग हुआ। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने प्रारम्भिक जय गणेश कीर्तन किया। श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी, श्री स्वामी भक्तिभावानन्द जी तथा ब्रह्मचारी श्री आत्मनिष्ठ चैतन्य जी ने अति प्रभावशाली कीर्तन किया।

महासचिव, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने संक्षिप्त प्रवचन दिये तथा उसके उपरान्त चयनित ब्रह्मसूत्रों के पाठ द्वारा श्री भगवान् व्यास तथा गुरु-परम्परा का आह्वान और आशीर्वाद-प्राप्ति की प्रार्थना की।

अपराह्न में गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के जीवन-चरित और शिक्षाओं पर वरिष्ठ स्वामी जी द्वारा प्रवचन हुए।

रात्रि सत्संग में दैनिक प्रार्थनाओं और स्तोत्रों के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्री राम शर्मा जी की 'निकुंज बिहारी रासलीला मण्डली, वृन्दावन' द्वारा 'रासलीला' का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, जो सात दिन चलता रहा।

८ जुलाई से १४ जुलाई तक साधना सप्ताह का कार्यक्रम चला। इसका वर्णन आगामी अंक में किया जायेगा।

१६ जुलाई २००९ को परम आराध्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की ४६ वीं पुण्यतिथि आराधना मनायी गयी। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री स्वामी शिवानन्द सत्संग भवन में ब्राह्ममुहूर्त ध्यान-प्रार्थना सत्र से हुआ। उसके पश्चात् दिव्य नाम संकीर्तन सहित प्रभातफेरी हुई।

यज्ञशाला में विश्व-शान्ति और मानव-कल्याण हेतु यज्ञ-हवन किया गया। श्री गुरुदेव समाधि-मन्दिर और फिर सत्संग-भवन में भव्य पादुका-पूजा की गयी। पादुका-पूजा में सभी भक्तों ने भाग लिया। सायंकाल श्री विश्वनाथ घाट पर गंगा आरती तथा रात्रिकालीन सत्संग में भजन-कीर्तन और विविध कार्यक्रम हुए।

इन कार्यक्रमों में देश के सभी भागों से भक्त आ कर सम्मिलित हुए।

ईश्वर की अनुकम्पा तभी फलीभूत होती है जब साधक की साधना में लगन और सच्चाई होती है।

स्वामी शिवानन्द

६२ वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स का समापन-समारोह

६२ वें बेसिक योग-वेदान्त पाठ्यक्रम (कोर्स) का समापन-समारोह सोमवार, २९ जून २००९ को एकाडेमी के प्रवचन-हाल में सम्पन्न हुआ। प्रारम्भिक प्रार्थनाओं के पश्चात् एकाडेमी के कुल-सचिव (रजिस्ट्रार) श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने उपस्थित सभी का स्वागत किया। प्रोफेसर राजेन्द्र कुमार भारद्वाज जी (उप-कुलसचिव) ने कोर्स की रिपोर्ट पढ़ी। उसके पश्चात् कुछ विद्यार्थियों ने कोर्स के सम्बन्ध में अपने हृदय के उद्गार प्रकट किये।

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परमाध्यक्ष तथा परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव ने समारोह की शोभा में अभिवृद्धि की। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र दिये तथा परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने छात्रों को ज्ञान-प्रसाद (पुस्तकों के पैकेट) दिये और प्राध्यापक-वर्ग को सम्मानित किया।

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने अपने आशीर्वचनों में कहा कि छात्र गण उनके दो महीनों की अवधि में आश्रम में रहे तथा पाठ्यक्रम की पूर्ति की, इस कारण वे सब धन्य हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में से उदाहरण दे कर कहा कि उनके अन्तर्स्थित दिव्यता, अध्यात्म-मार्ग पर चलने हेतु मार्गदर्शक बनेगी। यह 'अधियज्ञ' है तथा उनकी आध्यात्मिक जागरूकता उन्हें अवगत होनी चाहिए और मुमुक्षुत्व

उद्दीप्त करना चाहिए। स्वामी जी ने तैत्तिरीय उपनिषद् की शिक्षावल्ली का सन्दर्भ भी दिया, जिसमें विदा लेते छात्रों को किस प्रकार उद्देश्यपूर्ण जीवन की ओर अग्रसर होना आवश्यक है, इसका उपदेश उनके गुरु देते हैं। स्वामी जी ने कहा कि गुरुदेव का 'भले बनो, भला करो' सूत्र आध्यात्मिक जीवन का सार है।

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने अपने विदा वक्तव्य में छात्रों के जीवन अर्थपूर्ण करने हेतु कुछ मूल सिद्धान्तों की आवश्यकता पर बल दिया। स्वामी जी ने छात्रों को सलाह दी कि आध्यात्मिक साधकों को सदा सादगीपूर्णहृहसरल, नम्र रहना चाहिए एवं सेवकों पर निर्भर नहीं होना चाहिए। अपने निजी सब कार्य उन्हें स्वयं ही करने चाहिए। स्वामी जी ने परम पूज्य गुरुदेव तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के इन गुणों के उपलक्ष्य में कुछ उदाहरण दिये। साधकों को अपनी अन्तर्बाह्य शुचि के विषय में सावधान रहना चाहिए। स्वामी जी ने उन्हें उपदेश दिया कि उनके दो महीनों के निवास में उन्होंने जो कुछ अच्छी बातें सिखीं, उनका आचरण करना आवश्यक है।

स्वामी जी ने गुरुदेव के आशीर्वाद छात्रों पर होने के लिए प्रार्थना करके अपने आशीर्वचन समाप्त किये।

सरस्वती-पूजा और प्रसाद-वितरण के साथ समारोह का समापन हुआ।

'मेरे पास यह है, यह नहीं; मैं अपूर्ण और अभावग्रस्त हूँ' इत्यादि विचार तब तक आपको परेशान करेंगे, जब तक कि आप आत्म-साक्षात्कार नहीं कर लेते।

स्वामी शिवानन्द

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा मानद ट्रस्टी और उपाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय

परम पूज्य गुरुदेव, श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के अनेकों भक्तों के तथा विभिन्न योग-समूहों के आमन्त्रणों के उत्तर में, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष तथा न्यासी, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज १२ अप्रैल से ३० जून २००९ तक नीदरलैंड, इटली, जर्मनी, दक्षिणी अफ्रीका तथा पुर्तगाल इत्यादि देशों में सांस्कृतिक यात्रा पर गये।

स्वामी जी महाराज ने नीदरलैंड के आवास-काल में श्री स्वामी हृदयानन्द माता जी के जन्मोत्सव में सम्मिलित हो कर विशेष सत्संग, प्रार्थनाओं, भजन-कीर्तन इत्यादि में भाग लिया; प्राणायाम कक्षाएँ, श्रीमद्भगवद्गीता और योगवासिष्ठ पर सामूहिक कक्षाएँ संचालित कीं। यह कक्षाएँ सोमवार से शुक्रवार तक प्रातः ७ से ८ बजे तक चलीं, इनमें सम्मिलित होने वालों ने स्वामी जी को कृतज्ञता-ज्ञापन करते हुए कहा कि इनमें भाग लेने से उनके कार्यालय और घर-परिवार के प्रति दृष्टिकोण में पूर्णतया परिवर्तन आ गया है तथा परस्पर के सम्बन्धों में शान्तिपूर्ण समरसता आ गयी है।

अप्रैल के तीसरे सप्ताह से मई अन्त तक श्री स्वामी जी ने इटली में मिलान और जिनोवा के निकट श्री एलेगेंडर वैन ऊस्ट्रम और श्री अन्नाग्रेज़िया सोला द्वारा आयोजित योग सेमिनारों में भाग लिया।

३० अप्रैल से ३ मई तक स्वामी जी इटली में वेनिस के निकट जैसोला में श्री इरोस सेलवेनिज़ा और श्रीमती ऐन्टोनिटा रोज़ी द्वारा आयोजित इटेलियन योगा

फैड्रेशन के ३५ वें वार्षिक सम्मेलन में सम्मिलित हुए। उन्होंने भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा धार्मिक संस्थाओं से और भी बहुत से प्रवक्ता आमन्त्रित किये थे। परम पूज्य श्री स्वामी आत्मप्रियानन्द जी (विवेकानन्द विश्वविद्यालय, श्री रामकृष्ण मिशन, बेलूर मठ, कोलकाता के उपकुलपति), परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश के अध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी, चिन्मय मिशन, मुम्बई के परम पूज्य श्री स्वामी उमानन्द जी, कोलकाता विश्वविद्यालय की श्रीमती रीता सिन्हा दास गुप्ता तथा और भी बहुत से महानुभावों ने इसमें भाग लेते हुए योग और ध्यान के विभिन्न पहलुओं की चर्चा की। परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने सम्मेलनों के मूलभूत विषय 'योग का अतीत और भविष्य' पर प्रवचन दिया जिसमें महाभारत तथा गीता के उपदेश और कथाएँ तथा गुरुदेव के 'समन्वय योग' के सम्बन्ध में बताया।

श्री और श्रीमती इरोस सेलवेनिज़ा के गुरुदेव के आश्रम से घनिष्ठ सम्बन्ध हैं तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज से इटेलियन योग फैड्रेशन द्वारा इस भले कार्य-संचालन के लिए विशेष आशीर्वाद प्राप्त किये हुए हैं। गत वार्षिक सम्मेलनों की भाँति इस बार भी उन्होंने प्रारम्भिक और अन्तिम समापन प्रवचन श्री स्वामी जी महाराज के लिए निश्चित किया था। सभी को लाभान्वित करते हुए श्री अन्नाग्रेज़िया सोला ने प्रवचनों को इटेलियन भाषा में

रूपान्तरित किया। आयोजकों ने स्वामी जी का धन्यवाद किया कि उनके सम्मिलित होने से इस वार्षिक सम्मेलन में भाग लेने वाले अत्यन्त लाभान्वित हुए हैं। स्वामी जी ने श्री स्टीफैनो मोरिगी, इन्स्टीट्यूटो योगा यूनीवर्सल, रोम तथा श्री जॉरजिओ फर्लेन तथा अन्यो द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भी भाग लिया।

२९ मई से १ जून २००९ तक स्वामी जी हॉर्न बैड मेनबर्ग (जर्मनी) के योग विद्या हाउस के श्री शुकदेव जी द्वारा आयोजित वार्षिक साप्ताहिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए जर्मनी गये, जिसमें ४०० जर्मन लोगों ने सपरिवार प्रातः, सायंकालीन सत्संगों में भाग लिया। स्वामी जी ने उन्हें अनेकों कहानियों द्वारा दिव्य नाम की महिमा को समझाते हुए गुरुदेव के दिव्य नाम सम्बन्धी उपदेशों को बता कर अष्टाक्षरी और पंचाक्षरी मन्त्रोच्चारण करवाया। विशेष चयनित व्यक्तियों के लिए भगवद्गीता के दर्शन पर विशेष अध्ययन गोष्ठी की गयी। स्वामी जी ने बहुत से प्रश्नों के उत्तर देते हुए उनकी भगवद्गीता दर्शन सम्बन्धी गलत धारणाओं को दूर किया।

४ से ९ जून २००९ तक स्वामी जी दिव्य जीवन संघ दक्षिणी अफ्रीका की हीरक जयन्ती में भाग लेने के लिए एमस्टर्डम से दक्षिणी अफ्रीका गये। मुख्य कार्यक्रम ५ से ७ जून तक शिवानन्द आश्रम, रेज़र्वोयर हिल्ज़, डर्बन तथा शिवानन्द कलचरल सेंटर, शिवानन्दनगर, ला मर्सी नामक दो स्थानों पर थे जो परस्पर ४० किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। शिवानन्द हीरक जयन्ती सम्मेलन ५ जून २००९ को हवन, गंगा आरती और विशेष सत्संग से प्रारम्भ हुआ। दिव्य जीवन संघ, दक्षिणी अफ्रीका के उप-सभापति श्री

राजन रेड्डी ने स्वागत-भाषण दिया; सचिव श्री बलन नदेसन ने सूचनाएँ दीं। इस विशेष अवसर पर नव-निर्मित सहजानन्द डायमण्ड जुबली केन्द्र का उद्घाटन, मुख्य-सम्माननीय अतिथि, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने किया। श्री रामकृष्ण केन्द्र, दक्षिणी अफ्रीका के उपाध्यक्ष श्री स्वामी शारदाप्रभानन्द जी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

उनके अनुरोध पर परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने उनके नवीनतम प्रकाशन, 'प्रैक्टिस ऑफ़ कर्म योगा' का विमोचन किया। यही वह प्रथम पुस्तक थी जो दिव्य जीवन संघ, दक्षिणी अफ्रीका के संस्थापक स्वामी सहजानन्द जी ने १९४८ में पढ़ी थी और फिर अपने आध्यात्मिक गुरु, परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के दर्शन किये तथा उन्हीं की प्रेरणा से दक्षिणी अफ्रीका में दिव्य जीवन संघ की स्थापना आज से ६० वर्ष पूर्व की। परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी तथा श्री स्वामी शारदाप्रभानन्द जी ने परम पूज्य श्री स्वामी सहजानन्द जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की जिनके सुयोग्य निर्देशन में दक्षिणी अफ्रीका दिव्य जीवन संघ ने गुरुदेव की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए कर्मयोग की भावना से अनुकरणीय अथक कार्य किया।

स्वामी जी ने बताया कि महाभारत में गुरु द्रोणाचार्य और एकलव्य की कथा में आदर्श गुरु-भक्ति तथा बलिदान का वर्णन मिलता है जिसमें एकलव्य ने गुरु-दक्षिणा के रूप में अपने गुरु द्रोणाचार्य को अपने दाहिने हाथ का अँगूठा समर्पित कर दिया था। और स्वामी सहजानन्द जी ने न केवल स्वयं

अपना ही समस्त जीवन गुरु-कार्य के प्रति समर्पित किया, प्रत्युत दक्षिणी अफ्रीका के सभी भक्त-शिष्यों को भी ऐसी ही भावना से पूरित कर दिया, जो कि अभी इस हीरक जयन्ती के अवसर पर स्पष्ट दिखायी दे रहा है। स्वामी सहजानन्द जी के सुयोग्य निर्देशन में संघ ने स्कूल निर्माण, चिकित्सालय तथा वहाँ के निर्धन रोगियों के लिए 'होम' के निर्माण इत्यादि के अनेक सराहनीय कार्य किये। श्री शारदादेवी आश्रम की परिव्राजिका इष्टप्राण जी तथा पूज्य श्री फ़ादर माइकलसन जी, जिनका पूज्य स्वामी सहजानन्द जी से दीर्घकालीन सम्पर्क रहा, इस शुभ अवसर पर आये हुए थे।

आगामी दो दिनों तक शिवानन्द इन्टरनेशनल कलचर्ल सेंटर (एस. आई. सी. सी.), शिवानन्द-नगर, ला मर्सी में हीरक जयन्ती का उत्सव चलता रहा। इसमें सम्पूर्ण दक्षिणी अफ्रीका के विभिन्न प्रान्तों से छह हजार के लगभग प्रतिनिधि सम्मिलित होने के लिए आये हुए थे।

समिति के सदस्यों तथा बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट के सदस्यों के अनुरोध पर स्वामी जी ने प्रातःकालीन सत्र के बाद निर्देशित ध्यान सत्रों का संचालन किया तथा कीनोट एड्रेस (मूलभाव सम्बोधन) दिया और प्रत्येक सत्र के अन्त में उनका समापन निष्कर्ष भी दिया, जिसे उपस्थित भक्तों ने अत्यन्त ध्यानपूर्वक सुना। अन्य महत्त्वपूर्ण महानुभाव यथाहहपरम पूज्य श्री स्वामी विमोक्षानन्द जी महाराज, दक्षिणी अफ्रीका रामकृष्ण केन्द्र के अध्यक्ष, सम्माननीय श्री एच. वी. श्रिंगले, आई. एफ. एस. कौंसल जनरल (डरबन में भारत के); एच. ई. प्रिंस एम. जी. बुथेल जी, एम. पी. तथा

सम्माननीय डिप्टी मेयर और कौंसलर श्री लोगी नायडू, सभी ने परम पूज्य श्री स्वामी सहजानन्द जी के व्यक्तिगत निर्देशन में दिव्य जीवन संघ, दक्षिणी अफ्रीका द्वारा निष्काम सेवा के रूप में किये गये कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। स्वामी सहजानन्द जी गुरुदेव की शिक्षाओं का गत साठ वर्षों से निरन्तर अपने कार्यों द्वारा विशद रूप से प्रचार-प्रसार कर रहे थे।

दक्षिणी अफ्रीका की दिव्य जीवन संघ की सभी शाखाओं ने शाखा की ध्वजाओं सहित गुरुदेव की शिक्षाओं के गीत तथा महामन्त्र कीर्तन व भजन गाते हुए खुले ऑडिटोरियम में परेड की। ४ से १० वर्ष की आयु के छोटे बच्चे राम, कृष्ण, बुद्ध, हनुमान् तथा अन्य सन्त-महात्माओं का वेश धारण करके मोटर कारों के बने हुए बड़े-बड़े हाथियों पर बैठाये गये थे; और हाथी मानो हवा में तैर से रहे थे। वह बच्चे अपनी मधुर सुरीली आवाज में ६ सहस्र श्रोताओं के हृदय को आन्दोलित करते हुए गुरुदेव की शिक्षाओं का गान कर रहे थे; इसी प्रकार वह गुरुदेव वेदिका तक आये। उनका यह गायन और वेशभूषा यह अभिव्यक्त कर रही थी कि सत्य-ईश्वर और परम सत्ता वास्तव में एक ही है यही विविध रूपों में, विभिन्न मतों-पथों में भाँति-भाँति से कहा गया है।

उपसभापति ने आश्रम मुख्यालय का, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज को भेजने के लिए परम सन्तोष और धन्यवाद प्रकट किया, क्योंकि स्वामी जी द्वारा लायी गयी आध्यात्मिक समरसता से न केवल गुरुदेव की अपितु पूज्य स्वामी सहजानन्द जी की भी दिव्य उपस्थिति की उत्सव के तीनों दिन प्रतिक्षण अनुभूति होती रही। श्री स्वामी जी 'सहज

कुटीर' पर ऋषिकुमारों तथा अन्य समिति सदस्यों सहित प्रार्थना करने के उपरान्त, ८ जून को यूरोप के लिए चले।

मास्टर जॉर्ज वेग ई कास्ट्रो, 'योग सांख्य-एसोसिएको लूसा डो योगा, योगा लूसा फेड्रेशन, पोर्टोगूसे कॉन्फेड्रेशन, लिसबौन' (पुर्तगाल) के संस्थापक-प्रधान के आमन्त्रण पर स्वामी जी २० जून को लिस्बौन पहुँचे और योग सांख्य केन्द्र गये। वहाँ जॉर्ज वेग ई कास्ट्रो तथा अन्य व्यक्तियों के साथ कुछ देर बैठ कर ध्यान किया। 'योगा वॅ:ड्स डे' (योग विश्व-दिवस) का मुख्य कार्यक्रम २१ जून को इनाटेल स्टेडियम में ११.३० बजे अपराह्न से था। उन्होंने भजन-कीर्तन और योगासन-प्रदर्शन का कार्यक्रम रखा था।

योग सांख्य एसोसिएशन ने भारत के आध्यात्मिक, धार्मिक और राजनैतिक प्रतिनिधियों

को इस कार्यक्रम में निमन्त्रित किया था। इसमें एच. ई., पुर्तगाल में भारत के राजदूत, श्री डी. आर. कार्तिकेयन, भारत सरकार के सी. बी. आई. के पूर्व-निदेशक तथा नेशनल ह्यूमेन राइट्स कमीशन के डायरेक्टर जनरल और योग प्रशिक्षक, हिन्दू मन्दिरों के मुख्य अधिकारी तथा धार्मिक संस्थाओं (भारत और पुर्तगाल की) के प्रमुख अधिकारी भी सम्मिलित हुए। उन्होंने एकता, समरसता और विश्व-शान्ति लाने का हेतु योग को बताते हुए उसकी महिमा का वर्णन किया।

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने गुरुदेव के समन्वय योग पर प्रवचन दिया तथा शान्ति-मन्त्र और गुरुदेव की विश्व-प्रार्थना भी बोली। अन्ततः अधिकारियों से विदाई लेते हुए भारत लौटने के लिए एमस्टरडम की ओर चले गये।

दिव्य जीवन संघ, दक्षिणी अफ्रीका का 'शिवानन्द-हीरक-जयन्ती' सम्मेलन

दिव्य जीवन संघ, दक्षिणी अफ्रीका का 'शिवानन्द-हीरक-जयन्ती' सम्मेलन ५ से ७ जून २००९ को मनाया गया। शुक्रवार, ५ जून को रैज़रवायरहिल्ज़ पर हवन के साथ मुख्य कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। सायंकालीन सत्संग में गंगा-आरती की गयी। लगभग १४०० भक्त इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए थे। इस विशेष अवसर पर नव-निर्मित 'सहजानन्द डायमण्ड जुबली सेंटर' (हीरक जयन्ती केन्द्र) का उद्घाटन दिव्य जीवन संघ, ऋषिकेश, भारत के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने किया। इसी अवसर पर

'प्रैक्टिस ऑफ कर्मयोगा' (जो कि स्वामी सहजानन्द जी ने सर्वप्रथम १९४८ में पहली पुस्तक छपवायी थी और उसी समय उन्होंने अपने गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के प्रथम दर्शन किये थे तथा दक्षिणी अफ्रीका में दिव्य जीवन संघ का शुभारम्भ किया था) पुस्तक के नवीनतम संस्करण का विमोचन भी पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने किया। रामकृष्ण केन्द्र, दक्षिणी अफ्रीका के उपाध्यक्ष श्री स्वामी शारदाप्रभानन्द जी तथा शारदा देवी आश्रम की परिव्राजिका इष्टापर्णा जी भी इस अवसर पर उपस्थित हो कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे थे।

शिवानन्द इन्टरनेशनल कल्चरल सेंटर, शिवानन्दनगर, ला मर्सी में निरन्तर दो दिनों तक उत्सव चलता रहा। इस तीन दिवसीय उत्सव में समस्त देश से आये हुए लगभग ५८०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस उत्सव में परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, स्वामी विमोक्षानन्द जी तथा स्वामी शारदाप्रधानन्द जी (अध्यक्ष और उपाध्यक्ष, रामकृष्ण केन्द्र, द. अ.) द्वारा तीनों दिन आत्म-प्रेरक प्रवचन, आध्यात्मिकता-सम्पन्न प्रातःकालीन सत्र तथा निर्देशित-ध्यान-सत्र सम्पन्न किये गये। फादर माइकलसन, जिनका पूज्य स्वामी सहजानन्द जी से दीर्घकालीन सम्पर्क रहा था, ने भी प्रवचन दिया। इसके अतिरिक्त परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की शिक्षाओं पर आधारित स्वास्थ्य और पारिवारिक ताल-मेल सम्बन्धी विषयों पर भी शिक्षाप्रद प्रवचन दिये गये। दिव्य जीवन संघ के युवा-वर्ग द्वारा एक 'यूथ फोरम सत्र' भी आयोजित किया गया जिसमें आधुनिक समय में आध्यात्मिक जीवन जीने के ज्वलन्त विषय पर चर्चा की गयी तथा पूज्य स्वामी जी द्वारा दिये गये निर्देशों पर भी प्रकाश डाला गया। समस्त सम्मेलन के दौरान एक मुख्य आध्यात्मिक विषय रहाहहभगवन्नाम, इसकी शक्तियाँ, समस्त दुःख-कष्टों को दूर करने तथा सुख-शान्ति लाने की इसकी क्षमताएँ!

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सुप्रसिद्ध कलाकारोंहहकार्तिकेयन पिह्लै, महेन्द्री पिह्लै, तानसेन नेपाल और शन्जीत तीलक ने सभी भक्तों को अत्यन्त आह्लादित किया। शिवोऽहम् नृत्य विद्यालय (गॉटंग) तथा शिवानन्द नृत्य अकादमी के उच्चकोटि के

कलाकार श्री मनीष महाराज के भव्य नृत्यों ने दर्शकों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। सम्मेलन का सर्वश्रेष्ठ अंग थाहहहह“लर्न टू टाइप एण्ड टू मेक टी (टाइप करना और चाय बनाना सीखें)” नामक नाटक की प्रस्तुति, जिसमें पूज्य श्री स्वामी सहजानन्द जी के अपने गुरुदेव परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज से भेंट होने से पहले और उसके बाद उनसे दीक्षित हो जाने तक के जीवन की झलक को प्रस्तुत किया गया था। इसके अतिरिक्त भारत के कौंसल जनरल श्री एच. वी. श्रिंगला, प्रिंस एन. जी. बुथेलेजी और डिप्टी मेयर लोगी नायडू के प्रवचन शिवानन्द आडिटोरियम में हुए। इस कार्यक्रम के विशेष आकर्षण रहेहहहहएक तो भक्तिमय संगीत के साथ-साथ व्यायामपूर्वक सामूहिक परेड तथा दूसरा एक मोटर गाड़ी जिसकी नाव सी बनायी गयी थी, जिसमें बैठे हुए बच्चे स्वामी सहजानन्द जी रचित साहित्य में से चयनित कविताएँ और पद गा रहे थे। स्वामी सहजानन्द जी ने २००७ में देह छोड़ने से पूर्व तक लगभग ५८ वर्ष तक दक्षिणी अफ्रीका के दिव्य जीवन संघ की बागडोर सँभालते हुए अथक सेवा-कार्य किया था।

संघ की १५ शाखाओं तथा युवा-वर्ग ने अत्यन्त श्रेष्ठ हास्य नाटक, संगीत के कार्यक्रम, नृत्य तथा सूचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। दक्षिणी अफ्रीका के दिव्य जीवन संघ की इन शाखाओं के १५०० के लगभग भक्तों ने स्टेडियम के चारों ओर सम्मान-सूचक ऐतिहासिक मार्च-पास्ट (परेड) में भाग ले कर श्री स्वामी शिवानन्द जी तथा श्री स्वामी सहजानन्द जी को श्रद्धांजलि समर्पित की।

जितने भी लोग इस सम्मेलन में भाग लेने आये, लगभग सभी का यह अनुभव था कि यह सर्वश्रेष्ठ सम्मेलन रहा; क्योंकि इसमें सांस्कृतिक, ज्ञानवर्धक और आध्यात्मिक सभी तत्त्वों का अति सुन्दर मिश्रण था। प्रातःकालीन ध्यान, सामूहिक लिखित जप, नाम-संकीर्तन, हनुमानचालीसा-पाठ तथा गंगा-आरती, इन सबने उपस्थित भक्त-समूह को आध्यात्मिकता के उच्च स्तर तक पहुँचा दिया था।

संस्था द्वारा इतनी सतर्कतापूर्वक इतने विशाल समारोह को आयोजित किया जाना वास्तव में स्वामी सहजानन्द जी को सम्मान और श्रद्धा समर्पण करना है। संघ अपने आध्यात्मिक गुरु श्री स्वामी शिवानन्द जी, श्री स्वामी सहजानन्द जी, अनेकों दानियों तथा उन सब स्वयंसेवकों का गहन हार्दिक धन्यवाद करता है, जिन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अथक परिश्रम किया।

सूचना

तृतीय राज्य-स्तरीय सम्मेलन, छत्तीसगढ़

तथा

दिव्य जीवन संघ, नन्दिनीनगर शाखा का

रजत-जयन्ती महोत्सव १२ से १४ दिसम्बर २००९

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से छत्तीसगढ़ की दिव्य जीवन संघ की शाखाएँ तृतीय राज्य-स्तरीय सम्मेलन तथा नन्दिनीनगर शाखा की रजत-जयन्ती का महोत्सव १२ से १४ दिसम्बर २००९ तक मना रही हैं। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय से वरिष्ठ स्वामी जी साधकों को निर्देशन देने के लिए और सम्मेलन में भाग लेने के लिए पधारेंगे। सभी साधक-भक्त इस सम्मेलन और उत्सव में भाग लेने के लिए सादर आमन्त्रित हैं।

पंजीकरण तथा अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-हह

१. श्री के. एस. ठाकुर, प्रधान

दिव्य जीवन संघ शाखा, नन्दिनीनगरहह४९००३६

जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़

फोन : ०९३००५४४९०७

२. श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी

फोन : ०९४०६०९३७४४

३. श्री स्वामी शिवदासानन्द जी

फोन : ०९४२४२८४३४९

४. श्री पंकज चौबे

फोन : ०७७९२४२५०९५

५. श्री के. एल. बरेथ

फोन : ०९४२५५६७९४९

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

अम्बाला (हरियाणा): जून, २००९ की माहावधि में शाखा ने दैनिक सत्संग, दैनिक महिलाहृद्ययोगासन-वर्ग और मासिक सत्संग सम्पन्न करके दो औषधालयों द्वारा होमियोपैथिक सेवा का सातत्य रखा।

आस्का (उड़ीसा): शाखा द्वारा आश्रम में प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति गुरुवार को भक्तों के निवासस्थानों पर चल-सत्संग के परिचालन के आधिक्य में, अप्रैल में ब्रह्मपुर के मेडिकल कॉलेज के प्राध्यापकों की सहायता से एक निःशुल्क मेडिकल कैम्प और जून में डायाबीटीक चेक-अप का एक कैम्पहृद्यआदि आयोजित किये। एक संन्यासिनी माता जी की षोडशी पर कुष्ठरोगियों की संस्था के निवासियों को बर्तन और वस्त्रों का निःशुल्क वितरण किया।

बड़कुंआल (उड़ीसा): शाखा की दैनिक प्रभातीय पूजा के पश्चात् भगवद्गीता-पाठ और सायं-पूजा पश्चात् श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र-पारायण, भागवत पर प्रवचन; प्रभात में पादुका-पूजा और सायंकालीन सत्संग के उपरान्त शिवानन्द-जयन्ती को विशेष पादुका पूजन की सम्पन्नता हुई।

बढ़ियाउस्ता (उड़ीसा): आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द-गुरुसेवानन्द जी द्वारा उद्घाटित, 'चिदानन्द आश्रम प्रतिष्ठा-महोत्सव' के पुनीत अवसर पर दिनांक अप्रैल २७ से लेकर दिनांक १ मई में ५ दिवसीय आयोजित समारोह में सम्पन्न हुए नाम-यज्ञ, अन्न-यज्ञ, ज्ञान-यज्ञ, घृत-यज्ञ और भूत-यज्ञ में ५००० प्रतिभागी समावर्ती ग्रामजनों को प्रतिदिन भोजन दिया गया। दैनिक प्रभातीय योगासन-वर्ग और सांध्य-प्रवचनों की अधिक गतिविधियाँ हुईं।

बेंगलूरु, टस्कर-टाउन (कर्नाटक): शाखा द्वारा दिनांक ६ जून को आयोजित, "परम पूज्य चिदानन्द स्मृति व्याख्यान माला" का उद्घाटन पूर्वनिर्णीत माननीय महानुभाव गवर्नर श्री के द्वारा 'नई दिल्ली गानकला-भूषण', कार्यक्रम में उनकी अत्यावश्यक उपस्थिति के कारण नहीं हो सका। श्री आर. के. पद्मनाभ जी ने उद्घाटन करके श्रोताओं को हृदयस्पर्शी सुन्दर भजनों का श्रवण करा के परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी

महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज विषयक प्रवचन भी दिये। ब्रह्मलीन परम पूज्य श्री स्वामी जी के विषय में अपनी स्मृतियाँ और अनुभवों की अभिव्यक्ति, श्री ओमानन्द जी, श्री वी. एल. नागराज जी, श्री बी. एन. राव जी, स्वामी अपरोक्षानन्द माता जी, श्री शिवानन्द साहू जी तथा श्री बंसीप्रसाद जी द्वारा भी की गयी। चार घण्टोंपर्यन्त, इस दीर्घ-कार्यक्रम में, कन्नडा भाषा में 'Ponder These Truths' और 'Teachings of Swami Sivananda and Swami Chidananda' पुस्तकों का विमोचन हुआ और समापन में महा-आरती तथा प्रसाद-वितरण किया गया। शाखा ने प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग और प्रति सोमवार को चल-सत्संग सम्पन्न किये। स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल अस्पताल ने प्रति माह ४०० से अधिक मरीजों के उपचार किये।

बारिपदा (उड़ीसा): शाखा ने प्रति रविवार को पादुका-पूजा तथा प्रति माह के प्रथम रविवार को "मासिक-साधना-दिन" के परिचालन के साथ कुछ रोगियों की संस्था के ८० मरीजों को निःशुल्क औषधियों के वितरण के उपरान्त उस संस्था के ५३ निवासियों को दिनांक २२ जून को अन्नदान तथा वस्त्रदान किया।

बल्लारि (कर्नाटक): शाखा द्वारा दैनिक पूजा और प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग तथा पादुका-पूजा परिचालित करने के आधिक्य में दिनांक १९ जून को परम पूज्य श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज के जन्मदिन की वार्षिक जयन्ती को विशेष सत्संग किया गया।

ब्रह्मपुर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ :- प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति शनिवार को चल-सत्संग, प्रति गुरुवार को, प्रति शिवानन्द-दिन और प्रति चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजा, प्रति एकादशी को श्रीमद् भगवद्गीता का पाठ, संक्रान्ति दिन को, श्री सुन्दरकाण्ड पारायण और मासिक तृतीय प्रति रविवार को 'मासिक साधना-दिन'। विशेष गतिविधियाँ :- श्री रामनवमी महोत्सव : प्रतिदिन श्री रामायण पारायण (५० भक्तों द्वारा), दैनिक सांध्य-प्रवचन, समापन में हवन।

भंजनगर (उड़ीसा) : 'Ponder These Truths' के स्वाध्याय सहित प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग; एकादशी की तिथियों को विशेष सत्संग में श्री विष्णुसहस्रनाम और भगवद्गीता के दो अध्यायों काह्वहशाखा ने सम्पन्न किये। शाखा का ३४६ वाँ साधना-दिन महाविशुब संक्रान्ति कोह्वह३०० प्रतिभागियों द्वारा "श्री हनुमान- चालीसा" के १०८ आवर्तन, हवन और प्रसाद-सेवन तथा १०० भक्तों की प्रतिभागिता के साथ मनाया गया। वसन्त-नवरात्रि में दैनिक ५ घण्टोंयुक्त नौ दिवसीय श्री रामायण-पारायण; एवं रामनवमी विशेष पूजा, हवन तथा प्रसाद सेवन के साथ सुन्दरता से मनायी गयी।

भिलाई (छत्तीसगढ़) : शाखा ने प्रति मंगलवार को, मातृसत्संग में श्री हनुमान-चालीसा के पाठ और भजन-कीर्तन; प्रति शुक्रवार को "श्री ललिता सहस्रनाम स्तोत्र" के पारायण तथा उभय एकादशी की तिथियों को श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण और गीता परिचालन करने के साथ, दिनांक ३ मई को मासिक पादुका-पूजन सम्पन्न किया।

बीकानेर (राजस्थान) : दैनिक द्विवार पूजाएँ, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, "शिवानन्द-दिन" को पादपूजन, दिनांक ९ और दिनांक २७ को स्वाध्याय और 'श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण' सहित मातृसत्संग एवं "चिदानन्द-दिन" को हवनह्वहइत्यादि शाखा ने परिचालित किये। विशेष गतिविधियों में, दिनांक २८ जून से दिनांक ३० जून की तीन दिवसीय अवधि में मुम्बई से आयी हुई "इस्कोन-मण्डली" द्वारा भजन-कीर्तन और प्रवचनों के कार्यक्रम; विशेष कीर्तन-कार्यक्रम; जून २३ से जुलाई १ पर्यन्त नौ-दिवसीय विशेष पूजा समाविष्ट थे। योगासन-प्राणायाम-ध्यान वर्ग; शिवानन्द लाईब्रेरी, तथा सुपात्र छात्रों को शिष्यवृत्ति का प्रदान द्वारा समाज-सेवा का सातत्य रहा।

चण्डीगढ़ : शाखा के प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संग में, "साधना" "A Call to Liberation" के स्वाध्याय सम्पन्न हुए। सत्संग के बाद लगभग ३०० व्यक्तियों को भोजन दिया गया। दैनिक योगासन वर्ग के सातत्य उपरान्त दिनांक २१ जून को निःशुल्क मेडिकल कैम्प आयोजित किया गया।

दिनांक ८ जून को शाखा के मनाये गये स्थापना के ३० वें वार्षिक दिन के कार्यक्रमों में पादुका-पूजा, "गुरु का महत्त्व" विषयक प्रवचन, भक्तों के भावोद्गार, भजन-कीर्तन तथा

प्रीति-भोज समाविष्ट थे। शीतल दूध तथा मिठाइयों के पैकेट्स का वितरण, भगवान् श्री जगन्नाथ जी की रथ-यात्रा में किया गया। दिनांक २४-२५ जून को महामन्त्र का १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन किया गया।

छत्रपुर (उड़ीसा) : शाखा के दैनिक सत्संग के आधिक्य में प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग तथा दो विशेष सत्संग सम्पन्न हुए। तदुपरान्त संक्रान्ति-दिन को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, दिनांक २७ मई को एक विशेष चल-सत्संग में भी श्री सुन्दरकाण्ड पारायण एवं, "शिवानन्द-दिन" तथा "चिदानन्द-दिन" को पादुका-पूजन भी सम्पन्न हुए।

चेन्नै, अन्नानगर (तमिलनाडु) : शाखा ने श्री आदि शंकराचार्य जयन्ती विशेष सत्संग के साथ मनायी, जिसमें श्री सूर्यचन्द्रानन्द जी के, "आदि शंकराचार्य और उनका अद्वैत तत्त्व दर्शन," "ईश्वर-साक्षात्कार हेतु स्वामी शिवानन्द जी का मार्गदर्शन" और ज्येष्ठ भक्तों द्वारा, "The Vision and Mission of Swami Sivananda" ह्वहआदि समाविष्ट थे।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश) : शाखा का साप्ताहिक सत्संग प्रति बुधवार को सम्पन्न होने के उपरान्त निर्जला एकादशी को शरबत का तथा दिनांक ४ जून से रेलवे स्टेशन और अन्य सार्वजनिक स्थलों पर शीतल-जल का वितरण किया गया।

घाटपदमुर, जगदालपुर (छत्तीसगढ़) : शाखा ने दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना, ध्यान, स्तोत्रपाठ तथा उसके अनुसरण में योगासन-वर्ग तथा सायंकालीन ३० मिनटों का संकीर्तन एवं उसके पश्चात् दैनिक सत्संग पूर्ण किये। प्रति गुरुवार को पाद-पूजा, प्रति शनिवार को सुन्दरकाण्ड-पारायण, प्रति रविवार को, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण तथा रथयात्रा के मंगल दिन को एक घण्टा संकीर्तन भी सम्पन्न हुए।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़) : दैनिक गतिविधियाँ :- दैनिक त्रिवार पूजाएँ, ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा, प्रभातीय योगासन २ घण्टों का सांध्य-सत्संग परिचालित हुए।

विशेष गतिविधियाँ :- प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, प्रति शनिवार को, श्री सुन्दरकाण्ड का पाठ और अन्य दिनों को कुछ अन्य श्लोकोच्चारण, आश्रम के परिसर में रथ-यात्रा तथा विशेष पूजा सम्पन्न हुई।

जयपुर, राजा पार्क (राजस्थान): शाखा ने निज नियमित गतिविधियों का सातत्य रखा। (१) देवी भागवत विषयक दैनिक प्रभातीय प्रवचन, (२) प्रति शनिवार के साथ दिनांक २ जून को, 'श्री सुन्दरकाण्ड पारायण', प्रति गुरुवार को महामृत्युंजय मन्त्र के सामूहिक जप तथा सप्ताह के शेष चार दिनों को सत्संग, (३) हवन और गुरुदेव के पुस्तकों का स्वाध्याय सहित प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, (४) प्रति सोमवार को मातृसत्संग (५) 'स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल होमियोपैथिक औषधालय' ने जून माह में ७३७ मरीजों के उपचार किये, (६) दैनिक योगासन कक्षाएँ, (७) २६ निराधार विधवा स्त्रियों को मासिक रु. १५० की आर्थिक सहाय, (८) कुष्ठरोगियों की एक संस्था को ९० कि. ग्रा. अनाज, १५ कि. ग्रा. चीनी, २ कि. ग्रा. खाद्य तेल, १ कि. ग्रा. चायपत्ती का कोरा राशन, (९) दैनिक योगासन-वर्ग, (१०) ८० छात्रों को शिष्यवृत्तियाँ, (११) स्वामी शिवानन्द आध्यात्मिक पुस्तकालय।

जयपुर (उड़ीसा): शाखा द्वारा द्विवार पूजाएँ, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग तथा गुरुवार को चल-सत्संग का परिचालन होने के उपरान्त 'शिवानन्द-दिन' को हवन, स्वाध्याय, पूजा और प्रसाद-सेवन सम्पन्न हुए।

काकिनाडा, माधवपट्टनम् (आन्ध्र प्रदेश): नूतन उद्घाटित शाखा ने प्रति रविवार को २ घण्टोंपर्यन्त सत्संग नियमित रूप से किये तथा माह के प्रथम और तृतीय रविवार को मेडिकल कैम्प आयोजित किये।

खेड़ब्रह्मा (गुजरात): माह के तृतीय रविवार, दिनांक २१ जून को, आध्यात्मिक प्रवचन और ज्ञान-प्रसाद के वितरण सहित, मासिक सत्संग सम्पन्न हुआ।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): शाखा ने ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना, श्री विष्णु सहस्रनाम के और अन्य स्तोत्रों के पाठ तथा सांध्य-सत्संग के आधिक्य में, प्रति गुरुवार को चल-सत्संग, प्रति शनिवार को, "श्री सुन्दरकाण्ड पारायण" तथा उभय एकादशियों को श्रीमद्भगवद्गीता और श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र के पाठ सहित मातृसत्संग सम्पन्न किये। अन्य प्रवृत्ति में हर माह के दिनांक ३ को मासिक ६ घण्टों पर्यन्त अखण्ड महामन्त्र कीर्तन किया गया। गुरुदेव के संन्यास-दीक्षा के दिन, ५० युवा प्रतिभागियों के साथ आध्यात्मिक कैम्प का आयोजन दिनांक ३०, ३१ मई और १ जून को किया गया।

नई दिल्ली (वसन्त विहार): शाखा के साप्ताहिक सत्संग में माह के प्रथम रविवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, तृतीय रविवार को गुरुदेव की पुस्तकों का स्वाध्याय, द्वितीय तथा पंचम रविवारों को ध्यान तथा चतुर्थ रविवार को सन्तों द्वारा प्रवचन, समाविष्ट हैं।

नीमापड़ा (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ :- दैनिक महामन्त्र-कीर्तन और श्रीमद् भागवतम् का पाठ, पाद-पूजा प्रभात में और सायंकाल में सत्संग एवं चार चल-सत्संग। श्री हनुमान जयन्ती को पादपूजा, श्री हनुमान-चालीसा के १०८ आवर्तन, भजन-कीर्तन और प्रसाद-सेवन आयोजित हुए।

पटना (बिहार): शाखा ने रविवारीय सत्संग का तथा, 'चिदानन्द-दिन' को निर्धनों को अन्नदान का सातत्य रखा।

फूलबानी (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ :- दैनिक पूजा, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति गुरुवार को चल-सत्संग, शिवानन्द-दिन और चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजा तथा दिनांक २८ (मई को) मासिक नारायण-सेवा। विशेष गतिविधियों में, दिनांक १५ मई से दिनांक २३ मई पर्यन्त "श्री रामचरित मानस" का नवाह्न-पारायण और प्रवचन आयोजित हुए।

रायपुर (छत्तीसगढ़): शाखा ने प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग तथा एकादशी की उभय तिथियों को प्रभात में, विशेष पूजा और सन्ध्या को, "श्री विष्णु सहस्रनाम पारायण" सम्पन्न किये। दिनांक ३१ मई के भण्डारे में १००० भक्तों ने प्रसाद पाया।

राउरकेला, फर्टिलाईज़र टाउनशीप (उड़ीसा): शाखा ने प्रति गुरुवार, शनिवार और रविवार को सत्संग सम्पन्न किये।

सालेपुर (उड़ीसा): दैनिक गतिविधियाँ :- द्विवार पूजाएँ, ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान, प्रभात में 'श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र' सहित अन्य स्तोत्रों के पाठ, उसके पश्चात् प्रत्येकी १ घण्टा कीर्तन और जप, सायंकाल में १ घण्टा अध्ययन-कक्ष, "साधना" पुस्तक का स्वाध्याय और सत्संग। साप्ताहिक सत्संग प्रति रविवार को, मासिक गतिविधि में प्रथम शनिवार (दिनांक २ मई और ६ जून को) श्री सुन्दरकाण्ड पारायण तथा उसके अगले दिन, 'श्रीमद् भगवद् गीता पारायण', पादुका-पूजा के साथ 'शिवानन्द-दिन' को एक घण्टे पर्यन्त, 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' का एक घण्टाभर जप और विशेष सत्संग; 'मासिक साधना-दिन'

हहदिनांक १७ मई तथा २१ जून (तृतीय रविवार को), दिनांक मई, ३० और दिनांक २५ जून को महामन्त्र का अखण्ड कीर्तनहहआदि नियमित रूप से किये गये। विशेष गतिविधियाँ :- (१) कार्यक्रमों से भरपूर गुरुदेव की संन्यास-दीक्षा का वार्षिक दिन, (२) हनुमान जयन्ती को विविध कार्यक्रम। विशेष पूजा, १०८ आवर्तन श्री हनुमान-चालीसा के और प्रसाद-सेवन।

‘स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल अस्पताल’ द्वारा मई और जून की माहावधियों में ५९० मरीजों के उपचार किये गये।

सम्बलपुर (उड़ीसा): दैनिक तथा नियमित गतिविधियाँ :- दैनिक द्विवार पूजाएँ, रविवारीय सत्संग, ध्यान प्रति शनिवार को, पादुका-पूजाहह ‘शिवानन्द-दिन’ तथा ‘चिदानन्द-दिन’ को और श्रीमद् भगवद्गीता पारायण शुक्ल एकादशी को।

सामाजिक गतिविधियाँ :- प्रति सोमवार को नारायण-सेवा और मई के माह के दौरान होमियोपैथिक औषधालय द्वारा २३० मरीजों के उपचार किये गये।

साउथ बलाण्डा (उड़ीसा): शाखा ने दैनिक द्विवार पूजा, प्रति शुक्रवार को साप्ताहिक सत्संग, ‘शिवानन्द-दिन’ और ‘चिदानन्द-दिन’ को विशेष सत्संग, संक्रान्ति दिन को प्रभात में पादुका-पूजा तथा सायंकाल में महामन्त्र का ३ घण्टे अखण्ड जप और प्रसाद-सेवन आदि परिचालित किये। मासिक ३ घण्टों के महामन्त्र के अखण्ड संकीर्तन में और प्रसाद-सेवन में दिनांक १६ मई को १५० भक्तों तथा दिनांक २० जून को १३० भक्तों ने भाग लिया।

सुनाबेडा, (उड़ीसा): शाखा द्वारा प्रति रविवार और गुरुवार को द्विवार साप्ताहिक सत्संग, दिनांक ३१ मई को ‘साधना-दिन’ और श्री नृसिंह-जयन्ती को विशेष सत्संग आयोजित किये।

सुनाबेडा महिला शाखा (उड़ीसा): दैनिक तथा नियमित गतिविधियाँ :- प्रभातीय पूजा के पश्चात् भागवत-पाठ और मन्त्र-जप; सायंकाल में एक घण्टा महामन्त्र संकीर्तन के पश्चात् स्तोत्र-पाठ तथा प्रार्थनाएँ; प्रति बुधवार और शनिवार को सत्संग; प्रति रविवार को बालकों के लिए सत्संग; एकादशी की तिथियों को पादुका-पूजा और श्री विष्णु सहस्रनाम

स्तोत्र-पारायण। परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की मासिक पुण्यतिथियाँहहदिनांक २८ मई को १२ घण्टे अखण्ड महामन्त्र-जप किये गये। दिनांक २८ जून को श्री हनुमान-चालीसा के १०८ आवर्तन किये गये।

वडोदरा (गुजरात): शाखा ने प्रति गुरुवार को सत्संग तथा तीन रविवार को मार्गदर्शनयुक्त ध्यान सम्पन्न किये। ‘शिवानन्द-दिन’ और ‘चिदानन्द-दिन’ को पादुका-पूजा और मन्त्र-जप किये गये। शाखा की सामाजिक सेवाओंहहहोमियोपैथिक और आयुर्वेदिक औषधालयों, एक्युप्रेसर-उपचार तथा निर्धन मरीजों को औषधियों का वितरणहहआदि का सातत्य रहा।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): दिनांक १४ जून को तथा दिनांक २८ जून को शाखा ने द्वि-साप्ताहिक सत्संग सम्पन्न किये।

विशाखापट्टनम् (आन्ध्र प्रदेश): दैनिक तथा नियमित गतिविधियाँ :- दैनिक सान्ध्य-सत्संग और योगासन-वर्ग, प्रति सोमवार को साप्ताहिक सत्संग; सामान्य मेडिकल चेक-अप (परीक्षण); प्रति रविवार को मार्गदर्शनयुक्त ध्यान; प्रति एकादशी को भगवद्गीता के तीन प्रकरणों के पाठ।

परम पूज्य श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज की वार्षिक जन्म-जयन्ती को, पादुका-पूजा सहित विशेष सत्संग सम्पन्न हुआ।

विदेशी शाखाएँ

हांगकांग : माह के प्रति दूसरे शनिवार को सम्पन्न मासिक सत्संग में महामृत्युंजय मन्त्र का १ घण्टे पर्यन्त जप तथा ४८ प्रतिभागियों के मध्य पूज्य गुरुदेव की पुस्तकों विषयक प्रवचन समाविष्ट थे। शेष शनिवार के दिनों को एक घण्टे पर्यन्त महामन्त्र का जप सम्पन्न होता है। नियमित योगासन-वर्गों में मार्च के महीने में १७२ नये प्रतिभागी थे और अप्रैल माह में २४६ प्रतिभागी थे। प्रगति किये हुए प्रतिभागियों के योगासन-वर्ग में १९ तथा योग-कार्यशिविर में १९ प्रतिभागी थे। दिनांक ३ और १८ मार्च को मॉन्गकोक शाखा द्वारा योगासनों का प्रत्यक्ष निर्देशन किया गया।

विवेक की मशाल अपने हाथ में ले कर ध्यान के पथ पर चलिए। यदि आपका पथ-प्रदर्शक वैराग्य है, तो आपको लक्ष्य की प्राप्ति अवश्यमेव होगी।

स्वामी शिवानन्द

महत्त्वपूर्ण सूचना

कृपया सभी धन-राशि पोस्टल आर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा चेक के द्वारा "The Divine Life Society," Shivanandanagar, Uttarakhand के नाम से भेजें। बैंक ड्राफ्ट अथवा बैंकर चेक का देय "Rishikesh" के अन्तर्गत निम्नलिखित बैंक में होना चाहिए :

"State Bank of India, Punjab National Bank, Punjab and Sind Bank, Union Bank of India, State Bank of Patiala, Oriental Bank of Commerce, Canara Bank, Indian Overseas Bank, Bank of India, Bank of Baroda."

* राशि भेजने का हेतु अवश्य लिखें। साथ ही पूरा पता और टेलीफोन नम्बर भी लिखें।

* यदि आपकी राशि रु. २००/- से अधिक हो, तो आप निजी चेक (Personal Cheque) भेज सकते हैं।

* कृपया राशि मनी आर्डर (Money Order) द्वारा भेजने की उपेक्षा करें। मनी आर्डर इलैक्ट्रॉनिक माध्यम से भेजे जाते हैं और उनमें प्रेषक का धन भेजने का उद्देश्य या कोई अन्य सन्देश नहीं आता। अतः यदि मनी आर्डर द्वारा धन भेजें तो कृपया एक अलग पत्र द्वारा मनी आर्डर नम्बर और धन-राशि भेजने का उद्देश्य लिख कर भेजें।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पावन-स्मृति में

बड़े दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि श्री स्वामी रामचरणानन्द जी (मुख्यालय आश्रम) का अचानक और अप्रत्याशित निधन, दिनांक १४ जुलाई २००९ को, काठमांडु, नेपाल के पशुपतिनाथ टेम्पल हॉस्पिटल में प्रातः २.३० को, हुआ। श्री स्वामी जी कैलास-यात्रा को गये और ऐसा ज्ञात हुआ कि यात्रा के दौरान उन पर हृदयरोग का हमला पड़ा। उन्हें 'ओम् अस्पताल' काठमांडु में तुरन्त ले गये तथा उपचार हेतु उन्हें दिनांक ८ जुलाई २००९ को भर्ती किया। पश्चात् 'पशुपतिलाथ टेम्पल हॉस्पिटल' में उनको स्थानान्तरित किया गया। उनकी स्थिति में सुधार नहीं हुआ और दिनांक १४ जुलाई २००९ को उन्होंने भगवद्-चरणों में आश्रय लिया। शुरू में वे मन्दिर डिपार्टमेंट में सेवा देते थे। गत थोड़े वर्षों से आश्रम के भजन-हाल में स्थित कार्तिकेय-मन्दिर में वे सेवा सम्पन्न कर रहे थे।

हम पूज्य गुरुदेव से प्रार्थना करते हैं कि श्री स्वामी रामचरणानन्द जी के गत आत्मा को सद्गति और परम शान्ति प्रदान करें!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी